



आमन लेखनी



कुछ बच्चे सीखें कुछ सीखें

अपने बच्चे को ऐसे बनाएं समझदार

वर्ष : 10 अंक : 328

लखनऊ, 11 नवम्बर, सोमवार 2024

पृष्ठ : 08

मूल्य : 2.00 रुपए

एक हैं तो सेफ हैं : पीएम मोदी

झारखंड की जनता को पीएम मोदी ने दिया एकजुट रहने का संदेश

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

रांची, झारखंड विधानसभा चुनाव के मद्देनजर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रविवार को यहां एक रैली को संबोधित करने पहुंचे। इस दौरान उन्होंने झारखंड की जनता को एकजुट रहने का संदेश दिया और एक हैं तो सेफ हैं का नारा बुलंद किया। पीएम मोदी ने झारखंड मुक्ति मोर्चा और कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) को तोड़कर उन्हें छोटी-छोटी जातियों में बांटना चाहती है।



मोदी ने दावा किया कि कांग्रेस ने देश की आजादी के बाद समाज के इस बिखराव का चुनावी फायदा उठाया और केंद्र में सरकार बनाती रही। उन्होंने कहा, कांग्रेस हमेशा से एससी, एसटी और ओबीसी की एकजुटता की घोर विरोधी रही है। आजादी के बाद जब तक एससी, एसटी और ओबीसी समाज बिखरा रहा, कांग्रेस बांटो और राज करो के सिद्धांत के जरिये केंद्र में सरकारें बनाती रही। लेकिन जैसे ही वे समुदाय एकजुट हुए कांग्रेस फिर पूर्ण बहुमत के साथ केंद्र

में अपनी सरकार नहीं बना पाई। मोदी ने राज्य की जनता से इस गणित को समझने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि 1990 में ओबीसी समुदाय को जब आरक्षण मिला इस समाज के अलग-अलग जातियों का संख्या बल एक साथ जुड़ गया। उन्होंने कहा कि इसके बाद से कांग्रेस अब तक लोकसभा में 250

सीट भी नहीं जीत पाई है। उन्होंने कहा, इसलिए कांग्रेस ओबीसी की इस सामूहिक ताकत को तोड़ना चाहती है और समुदाय को सैकड़ों अलग-अलग जातियों में बांट देना चाहती है। प्रधानमंत्री ने झारखंड मुक्ति मोर्चा और कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि भाजपा-एनडीए का एक ही मंत्र है हमने झारखंड बनाया है, हम ही झारखंड संवारेगे। ऐसे लोग कभी झारखंड का विकास नहीं करेंगे, जो झारखंड राज्य के निर्माण के विरोधी रहे हैं। उन्होंने आगे कहा, भाजपा चाहती थी

कि गरीब को पक्का घर मिले, शहरों-गांवों में अच्छे रास्ते बनें, बिजली-पानी मिले, इलाज की सुविधा हो, पढ़ाई की सुविधा हो, सिंचाई के लिए पानी मिले, बुढ़ापे में दवाई मिले। लेकिन जेएमएम सरकार के पिछले 5 साल में आपके हक की वे सुविधाएं जेएमएम और कांग्रेस के लोगों ने लूट लीं। भाजपा चाहती थी कि गरीब को पक्का घर मिले, शहरों-गांवों में अच्छे रास्ते बनें, बिजली-पानी मिले, इलाज की सुविधा हो, पढ़ाई की सुविधा हो, सिंचाई के लिए पानी मिले, बुढ़ापे में दवाई मिले।

पीएम मोदी ने दावा किया कि इससे रोटी, माटी और बेटी पर गंभीर खतरा पैदा हो गया है। उन्होंने सतारूढ़ सरकार पर घुसपैठियों को बढ़ावा देने का भी आरोप लगाया। झामुमो नीत सरकार पर झारखंड की जमीन, नदियां और पहाड़ बेचकर रेत की तस्करी कर करोड़ों रुपये कमाने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा, 'जिन लोगों ने जनता का पैसा लूटा है वे अपना जीवन जेल में बिताएंगे, उन्हें पैसा लौटाना होगा।' उन्होंने आरोप लगाया कि गठबंधन के नेता न केवल संसाधनों को लूट रहे हैं, बल्कि जन्म और मृत्यु प्रमाण पत्र जारी करने के लिए रिश्वत भी ले रहे हैं। मोदी ने कहा कि ऐसे लोगों को सत्ता में बने रहने का कोई अधिकार नहीं है। उन्होंने कहा कि तीन करोड़ महिलाओं को लखपति दीदी बनाने का लक्ष्य है। उन्होंने कहा कि रागी की खेती को बढ़ावा दिया जाएगा और झारखंड के किसानों के लिए अवसर और समृद्धि लाएगा। उन्होंने कहा, 'यह मोदी की गारंटी है कि भाजपा के घोषणापत्र में गो गो दीदी योजना (हर महीने महिलाओं को 2,100 रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान करने का) सहित सभी वादों को पूरा किया जाएगा।'

समाजवादी पार्टी के पीडीए का मतलब ढंगाड़ियों और अपराधियों का प्रोडक्शन हाउस

संवाददाता/ अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को समाजवादी पार्टी (सपा) के पीडीए (पिछड़े, दलित, अल्पसंख्यक) की नई परिदेतें हुए इसे ढंगाड़ियों और अपराधियों का प्रोडक्शन हाउस करार दिया। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने साल 2022 के विधानसभा चुनाव के दौरान पीडीए का नारा दिया था। पार्टी ने पिछड़े, दलित और अल्पसंख्यक वर्ग को सम्बोधित इस नारे का इस्तेमाल इस साल सम्पन्न संसदीय चुनाव में भी किया था, जिसमें उसने लोकसभा चुनाव में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 37 सीट जीती थी।



आदित्यनाथ ने आम्बेडकर नगर जिले की कटेहर विधानसभा सीट पर आगामी 20 नवंबर को होने वाले उपचुनाव के सिलसिले में आयोजित एक रैली को संबोधित करते हुए कहा, सपा पीडीए की बात करती है, लेकिन

आपको बता दें कि उनका पीडीए क्या है। यह ढंगाड़ियों और अपराधियों का प्रोडक्शन हाउस है। मैं आपको यह नई परिदेतें रहा हूँ। उन्होंने कहा कि किसी भी बड़े अपराधी, माफिया या ढंगाड़ को याद रखें। वे सपा के प्रोडक्शन हाउस से ही निकलें हैं।

मुख्यमंत्री ने महिला सुरक्षा को लेकर भी सपा पर हमले किये। उन्होंने कहा, देख सपाईं, बिटिया घबराईं। अयोध्या और कन्नौज में कथित बलात्कार और लखनऊ में एक महिला के साथ दुर्व्यवहार की घटनाओं का उदाहरण देते हुए, आदित्यनाथ ने कहा, 'सपा ने अयोध्या के बलात्कारी को क्लीन चिट देकर बचाने की कोशिश की और अन्य घटनाओं पर भी ऐसा ही किया।' उन्होंने कहा कि माफिया अतीक अहमद, खान मुबारक भी इसी प्रोडक्शन हाउस के हैं। मुख्यमंत्री ने कहा, जब डबल इंजन की सरकार बनी और उसने अपना अरली चेहरा उन्हे दिखाया, तो उनके राम नाम सत्य में देर नहीं हुई। उन्होंने कहा कि भाजपा वंशवादी या जातिवादी राजनीति नहीं करती है बल्कि वह महान हस्तियों का सम्मान करती है।

मौसम अधिकतम तापमान 33.C न्यूनतम तापमान 24.C

बाजार सोना 7,177/9 चांदी 96/9

संसेवस 81,634.72 निफ्टी 25,013.85

संक्षिप्त समाचार
यूपी में 67 लाख से अधिक बिजली उपभोक्ताओं ने नहीं मरा बिल, ब्याज माफी योजना की मांग

लखनऊ। प्रदेश के 67,41,118 बिजली उपभोक्ता कई वर्षों से बिल नहीं जमा कर रहे हैं। इसकी जानकारी उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत उपभोक्ता परिषद के साप्ताहिक वेबिनार में उपभोक्ताओं ने दी। उपभोक्ताओं की तरफ से मांग की गई है कि बिल न जमा करने वाले उपभोक्ताओं के लिए ब्याज माफी योजना लागू की जाए। इनमें से करीब 15 प्रतिशत उपभोक्ताओं के बिजली के कनेक्शन कागज पर तो हैं, लेकिन हकीकत में उनके घरों में बिजली की आपूर्ति ही नहीं की जा सकी है। परिषद के अध्यक्ष व राज्य सलाहकार समिति के सदस्य अवधेश कुमार वर्मा ने बताया कि तमाम उपभोक्ता इसलिबिल नहीं जमा कर रहे हैं क्योंकि उन्हें एक साथ कई माह का बिल भेज दिया गया है। उन्होंने बताया कि 24 मई 2024 के तक पश्चिमांचल में 2,71,511 उपभोक्ताओं ने कभी बिजली का बिल नहीं जमा किया। इसी प्रकार दक्षिणांचल में 8,70,301 उपभोक्ता, मध्यांचल में 22,62,198 उपभोक्ताओं ने कभी बिजली का बिल नहीं जमा किया। पूर्वांचल में 33,17,368, केस्को में 19,740 उपभोक्ताओं ने कभी भी बिजली का बिल जमा नहीं किया है।

एक साथ भेजा जा रहा बिल
वेबिनार में उपभोक्ताओं ने बताया कि नोएडा, प्रतापगढ़, मऊ, गाजियाबाद, फिरोजाबाद, हरदोई, मैनपुरी, आजमगढ़, बुलंदशहर, लखीमपुर खीरी व कानपुर के तमाम गरीब उपभोक्ताओं को छह माह या एक वर्ष का बिल एक साथ भेजा जा रहा है। बिल अधिक होने की वजह से गरीब उपभोक्ता बिल जमा नहीं करते हैं।

कांग्रेस ने मोदी सरकार पर लगाया निजी निवेश और व्यापक उपभोग को पटरी से उतारने का आरोप

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नयी दिल्ली। कांग्रेस ने रविवार को दावा किया कि भारत लगातार आय में स्थिरता के कारण मांग के संकट का सामना कर रहा है। मुख्य विपक्षी दल ने कहा कि संग्रह सरकार के दौरान लगातार जीडीपी वृद्धि को गति देने वाला निजी निवेश और व्यापक उपभोग का दोहरा इंजन मोदी सरकार के पिछले दस वर्षों में पटरी से उतर गया है। कांग्रेस महासचिव और संचार प्रभारी जयराम रमेश ने सरकार से कहा कि वह कांग्रेस के प्रस्तावों को स्वीकार करे, जिसमें ग्रामीण भारत में आय वृद्धि को गति देने के लिए मनरेगा मजदूरी को न्यूनतम 400 रुपये प्रतिदिन तक बढ़ाना, किसानों के लिए एमएसपी और ऋण माफी की गारंटी देना तथा महिलाओं

के लिए मासिक आय सहायता योजना शामिल हैं। उन्होंने कहा कि समय बीतने के साथ ही भारत के घटते उपभोग की त्रासदी अधिक स्पष्ट होती जा रही है। उन्होंने एक बयान में कहा कि पिछले सप्ताह, भारतीय उद्योग जगत के कई सीईओ ने सिकुड़ते मध्य वर्ग पर चिंता जताई थी और अब, नारबाई के अखिल भारतीय ग्रामीण वित्तीय समावेशन सर्वेक्षण (एनएएफआईएस) 2021-22 के नए आंकड़े भी इस बात की पुष्टि करते हैं कि भारत के मांग संकट की वजह लगातार आय में स्थिरता है। रमेश ने सर्वेक्षण के आंकड़ों का हवाला देते हुए कहा कि औसत मासिक घरेलू आय कृषि परिवारों के लिए 12,698 रुपये से 13,661 रुपये और गैर-कृषि परिवारों के लिए 11,438 रुपये है।

महिलाओं, किसानों और युवाओं पर भाजपा का फोकस

अमित शाह ने जारी किया संकल्प पत्र

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नई दिल्ली, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को महाराष्ट्र के आगामी विधानसभा चुनाव के लिए भारतीय जनता पार्टी का संकल्प पत्र जारी किया। भाजपा ने अपने इस संकल्प पत्र में महिलाओं, किसानों और युवाओं के लिए बड़ी घोषणाएं की हैं। संकल्प पत्र में बीजेपी ने महिलाओं को हर महीने 2100 रूपए देने की बात कही है। पार्टी ने किसानों का कर्ज माफ करने की घोषणा की और युवाओं को 25 लाख नौकरियां देने का वादा किया है। इसके अलावा भी राज्य की जनता के लिए कई घोषणाएं की गयी हैं।



भाजपा का संकल्प पत्र जारी करते हुए अमित शाह ने कहा कि यह महाराष्ट्र की जनता की आकांक्षाओं का प्रतिबिंब है। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र एक प्रकार से कई युगों से हर क्षेत्र में देश का नेतृत्व कर रहा है। एक

आकांक्षाओं का प्रतिबिंब हमारे संकल्प पत्र में दिखाई पड़ता है। अमित शाह ने कहा, 'हम जो संकल्प पत्र लेकर आए हैं, उसमें 25 प्रमुख मुद्दों हैं। लाइली बहन योजना और युद्धव्यवस्था पेंशन में हम बढ़ोतरी कर रहे हैं। किसानों के ऋण माफ और किसान सम्मान निधि को 12 हजार रुपये से बढ़ाकर 15 हजार रुपये करेंगे। 10 लाख प्रतिभावान छात्रों को मासिक 10 हजार रुपये का मानदेय देंगे। 45 हजार गांवों में रास्ते बनाए जाएंगे। आशा वर्कर और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं का बीमा किया जाएगा और उनका मासिक वेतन 15 हजार रुपये तक बढ़ाया जाएगा। अमित शाह ने विपक्षी गठबंधन महा विकास अघाड़ी पर निशाना

साधा। उन्होंने कहा कि अघाड़ी की सारी योजनाएं सत्ता की लालच में त्रुटिकरण की हैं, विचारधाराओं का अपमान करने वाली हैं और महाराष्ट्र की संस्कृति से छल करने वाली हैं। शाह ने वीर सावरकर का नाम लेकर राहुल गांधी और उद्धव ठाकरे पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि उद्धव ठाकरे से पूछना चाहता हूँ कि क्या वह कांग्रेस के नेता राहुल गांधी से कह सकते हैं कि वह वीर सावरकर के लिए दो शब्द बोल दें? उन्होंने आगे कहा, 'क्या कांग्रेस का कोई नेता बाला साहब ठाकरे जी के सम्मान में दो वाक्य बोल सकता है? अंतर्विरोध के बीच में अघाड़ी की सरकार बनाने का स्वप्न लेकर जो लोग निकले हैं, उन्हें महाराष्ट्र की जनता जान ले तो अच्छा होगा।'

एनकाउंटर वाली सरकार का काउंटडाउन शुरू...

सीएम योगी पर अखिलेश का कटाक्ष- इनकी योग्यता की परीक्षा करानी पड़ेगी

संवाददाता/ अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। विधानसभा उपचुनाव के दौरान चल रही जुलानी जंग के बीच सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने भाजपा पर तीखा हमला बोला। कहा, एनकाउंटर वाली सरकार का काउंटडाउन शुरू हो गया है इसलिए उनकी भाषा बदल गई है। इसला भाषी योजना लागू की जाए। इनमें से करीब 15 प्रतिशत उपभोक्ताओं के बिजली के कनेक्शन कागज पर तो हैं, लेकिन हकीकत में उनके घरों में बिजली की आपूर्ति ही नहीं की जा सकी है। परिषद के अध्यक्ष व राज्य सलाहकार समिति के सदस्य अवधेश कुमार वर्मा ने बताया कि तमाम उपभोक्ता इसलिबिल नहीं जमा कर रहे हैं क्योंकि उन्हें एक साथ कई माह का बिल भेज दिया गया है। उन्होंने बताया कि 24 मई 2024 के तक पश्चिमांचल में 2,71,511 उपभोक्ताओं ने कभी बिजली का बिल नहीं जमा किया। इसी प्रकार दक्षिणांचल में 8,70,301 उपभोक्ता, मध्यांचल में 22,62,198 उपभोक्ताओं ने कभी बिजली का बिल नहीं जमा किया। पूर्वांचल में 33,17,368, केस्को में 19,740 उपभोक्ताओं ने कभी भी बिजली का बिल जमा नहीं किया है।



का जन्मदिन सपा कार्यालय में मनाने के बाद अखिलेश यादव ने मीडियाकर्मियों से कहा कि नोटबंदी

दुनिया के सबसे बड़े आर्थिक प्रणाली के रूप में सामने आई है। नोटबंदी का एक भी लक्ष्य पूरा नहीं हुआ। सपा मुख्यालय में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर हमलावर अखिलेश ने कहा कि मन की कुटिलता ही वचन की कटुता बनती है। जिन्होंने अपने ऊपर दर्ज सच्चे मुकदमे हटाए हैं, दूसरों पर उतने ही झूठे मुकदमे लगाए हैं। जो जितना बड़ा सत होता है, वह उतना ही कम बोलता है। कहा, इनकी योग्यता की परीक्षा करानी पड़ेगी। व्यक्ति वस्त्र से नहीं, वचन से नोकी होता है, जिनका काम सरकार चलाना होना चाहिए, वो

बुलडोजर चला रहे हैं। मृदुभाषी कटुभाषी बन गए हैं। सपा अध्यक्ष ने कहा कि पहली बार ऐसा हुआ है जब बुलडोजर की कार्रवाई पर सुप्रीम कोर्ट ने 25 लाख रुपये का जुर्माना लगाया है। सरकार अहंकार में संविधान भी भूल गई है। पूरी तरह से जंगलराज है। सरकार अत्याचार कर रही है, जिन्हें संविधान से चलना चाहिए, वे मन विधान से चल रहे हैं। जिन्हें सौहार्द के पुल बनाने चाहिए, वे नीचे-नीचे बारूदी सुरंग बिछा रहे हैं। जिनके राज में साधु संतों के बीच झगड़े करवाए जा रहे हैं, वे कैसे योगी हैं?

कांग्रेस को झटका, आप की बल्ले-बल्ले

पांच बार के विधायक मतीन अहमद पार्टी में शामिल

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नई दिल्ली, दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस पार्टी को एक बड़ा झटका देते हुए पांच बार के विधायक मतीन अहमद आम आदमी पार्टी में शामिल हो गए। मतीन अहमद रविवार को अरविंद केजरीवाल की मौजूदगी में आप में शामिल हुए। बता दें, मतीन अहमद से पहले उनके बेटे-बहु आम आदमी पार्टी का दामन थाम चुके हैं। मतीन अहमद को पार्टी में शामिल करने के दौरान का एक वीडियो अरविंद केजरीवाल ने अपने एक्स में डाल पर साझा किया। इसके



साथ उन्होंने लिखा, 'यमुना पार क्षेत्र में चौधरी मतीन अहमद जी जनता के बीच रहकर उनकी सेवा करते आए

हैं। चौधरी साहब का आम आदमी पार्टी परिवार में स्वागत है। आप को लामा चुका है झटका मतीन अहमद के आप में शामिल होने से ठीक पहले पार्टी को एक झटका लग चुका है। पार्टी के सोनियर नेता और दिल्ली सरकार में मंत्री रह चुके सरदार हरशरण सिंह बल्ले रविवार को भाजपा में शामिल हुए। बल्ले के साथ उनके बेटे सरदार गुरमीत सिंह रिकू बल्ले भी भाजपा में शामिल हुए। गुरमीत सिंह रिकू आम आदमी पार्टी के युवा चेहरे थे।

किश्तवाड़ मुठभेड़ में एक जवान शहीद, तीन घायल



एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नई दिल्ली, पिछले 24 घंटे जम्मू और कश्मीर के तीन इलाकों में आतंकवादियों और सेना के बीच मुठभेड़ हुई। पहली मुठभेड़ श्रीनगर, दूसरी किश्तवाड़ और तीसरी सोपेरा में हुई। किश्तवाड़ में हुई मुठभेड़ में सेना के चार जवान घायल हो गए, जिसमें से एक शहीद हो गया है। शहीद हुए सैनिक की पहचान 2 पैरा के नायब सूबेदार राकेश कुमार के तौर पर हुई है। सेना ने उनके सर्वोच्च बलिदान को सलाम किया है। इसके अलावा सोपेरा में सुरक्षाबलों ने एक आतंकी को मार दिया है। शीनगर के बाहरी इलाके में

जबरवान वन क्षेत्र में दो-तीन आतंकवादियों के होने की अपडेट मिलने के बाद सेना ने सच ऑपरेशन शुरू किया। इस दौरान सुरक्षाबलों और आतंकवादियों के बीच गोलीबारी हुई। अधिकारियों ने बताया कि यह मुठभेड़ सुबह करीब नौ बजे शुरू हुई थी। हालांकि, अब बताया जा रहा है कि आतंकी पीछे के रास्ते से भाग गए हैं, जिसके बाद सेना ने सच ऑपरेशन को

कुछ समय के लिए रोक दिया है। पुलिस उपमहानिरीक्षक, मध्य कश्मीर, राजीव पांडे ने कहा, हालांकि, दुर्गम इलाका होने के कारण सटीक स्थान का पता नहीं चल पाया है। हमारे जवानों पर भी कुछ गोलीयां चलाई गईं। घेराबंदी बढ़ा दी गई है और हमें उम्मीद है कि आतंकवादियों का पता लगा लिया जाएगा और उन्हें मार गिराया जाएगा।

किश्तवाड़ में हुई दूसरी मुठभेड़

दो ग्राम रक्षा रक्षकों की हत्या के बाद कुतवाड़ और केशवान के जंगलों में बृहस्पतिवार शाम से आतंकवाद रोधी अभियान जारी है। तलाशी अभियान के दौरान सुरक्षाबलों और आतंकवादियों में मुठभेड़ हुई, जिसमें तीन जवान घायल और एक शहीद हो गया। सेना ने शहीद सैनिक को पहचान 2 पैरा के नायब सूबेदार राकेश कुमार के तौर पर की और उनके सर्वोच्च बलिदान को सलाम किया। सेना ने एक्स पर किए एक पोस्ट में बताया, क्वाइट नाइट कोर के जीओसी (जनरल ऑफिसर कमांडिंग) और सभी रैंक के जवान 2 पैरा (एसएफ) के बहादुर नायब सूबेदार राकेश कुमार के सर्वोच्च बलिदान को सलाम करते हैं। सूबेदार राकेश भारत रिज किश्तवाड़ के सामान्य क्षेत्र में शुरू किए गए संयुक्त सीआई (आतंकवाद विरोधी) अभियान का हिस्सा थे। हम दुख की इस घड़ी में शोक संतप परिवार के साथ हैं। तीसरा मुठभेड़ सोपेरा में हुई थी, जहां एक आतंकी मुठभेड़ में मारा गया था।

महाराष्ट्र की जनता को महाविकास अघाड़ी ने दी 5 बड़ी गारंटियां

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नई दिल्ली, महाविकास अघाड़ी गठबंधन ने रविवार को महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के लिए अपना घोषणापत्र 'महाराष्ट्रनामा' जारी किया। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने महाविकास अघाड़ी के वरिष्ठ नेताओं और कार्यकर्ताओं की मौजूदगी में गठबंधन का घोषणापत्र जारी किया। घोषणापत्र में एमवीए ने महिलाओं को हर महीने 3000 रूपए देने का वादा किया है। इसके अलावा युवाओं को 4000 रूपए मासिक स्टैडपेंड देने की बात कही है। किसानों के लिए भी घोषणाएं की गयी हैं।



महाराष्ट्र की तरक्की और खुशहाली के लिए अपना मेनिफेस्टो 'महाराष्ट्रनामा' लॉन्च किया है। - महालक्ष्मी योजना के तहत महिलाओं को हर महीने 3000 रूपए दिए जाएंगे। इसके अलावा महिलाएं बस में फ्री में यात्रा कर पाएंगी। - कुटुंब रक्षा के तहत 25 लाख रुपये की स्वास्थ्य बीमा योजना महाराष्ट्र में लागू की जाएगी। मुफ्त में दवा भी उपलब्ध कराई जाएगी। - कृषि समृद्धि के तहत किसानों का

3 लाख रूपए कर्ज माफ किया जायेगा। नियमित कर्ज चुकाने पर 50000 रूपए का प्रोत्साहन दिया जायेगा। - युवाओं को हर महीने 4000 रूपए की मदद दी जाएगी। - जातिगत जनगणना कराई जाएगी और 50 प्रतिशत आरक्षण की सीमा हटाई जाएगी।

कुटुंब रक्षा कृषि समृद्धि युवाओं को वचन समानता की गारंटी खड़गे ने कहा, 'महाराष्ट्र का चुनाव देश के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण चुनाव है। ये चुनाव देश का भविष्य बदलने वाला चुनाव है। हम यहां महाविकास अघाड़ी की सरकार बनाएंगे, तभी राज्य प्रगति करेगा। किसान, महिला, युवा समेत प्रदेश का हर वर्ग खुशहाल होगा।'



संक्षेप

महाकुंभ 2025 के आयोजन को लेकर पुलिस और कोचिंग संचालकों की बैठक

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। रिजर्व पुलिस लाइंस, कमिश्नरेट प्रयागराज स्थित त्रिवेणी सभागार में पुलिस उपायुक्त नगर अभिषेक भारती और सहायक पुलिस आयुक्त कर्नलगंज द्वारा नगर क्षेत्र के प्रमुख कोचिंग संचालकों और प्रयागराज कोचिंग एसोसिएशन के अध्यक्ष के साथ आगामी महाकुंभ-2025 के सफल एवं सुचारु आयोजन पर एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में निम्नलिखित बिंदुओं पर चर्चा की गई:

- आगामी महाकुंभ-2025 के आयोजन में कोचिंग संस्थानों की भूमिका।
- महाकुंभ के दौरान जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए कोचिंग संस्थानों के परिसर का उपयोग।
- महाकुंभ के दौरान भीड़ नियंत्रण में कोचिंग संस्थानों के कर्मचारियों और छात्रों का योगदान (स्वयंसेवक के रूप में)।
- महाकुंभ-2025 के आयोजन में कोचिंग संस्थानों से सुझाव आमंत्रित किए गए।
- बैठक में कोचिंग संचालकों ने अपनी सामान्य समस्याओं पर भी चर्चा की।

इस दौरान, 11 नवम्बर 2024 को उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग के खिलाफ प्रस्तावित छात्र आंदोलन के संबंध में कोचिंग संचालकों ने स्पष्ट किया कि उनके संस्थान सामान्य रूप से 11 नवंबर को भी खुले रहेंगे और वे किसी भी प्रकार के छात्र आंदोलन का समर्थन नहीं करते हैं।

35 से ज्यादा कुवारी लड़कियों की प्रेग्नेंसी की खबर से मचा हड़कंप

अमन लेखनी समाचार

वाराणसी: यूपी के वाराणसी जिले के रमना गांव में 35 से अधिक लड़कियों के प्रेग्नेट होने की खबर ने हड़कंप मचा दिया है। दिवाली के दौरान मोबाइल पर आए बधाई संदेशों ने इन लड़कियों और उनके परिजनों को हैरान कर दिया। घटना का पता चलते ही प्रशासन में हलचल मच गई। जांच में यह सामने आया कि यह घटना एक आंगनबाड़ी कार्यकर्ता की मानवीय वृत्त के कारण हुई।

उत्तर प्रदेश में स्मार्ट मीटर की स्वीकार्यता बढ़ी, तेज होगा लगाने का काम

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। शुरूआती प्रतिरोध के बाद अब उत्तर प्रदेश के सभी बिजली वितरण कंपनियों (डिस्कॉम) के क्षेत्रों में स्मार्ट प्रीपेड मीटर लगाने का काम तेजी पकड़ रहा है। लगातार पांचवें साल बिजली दरें न बढ़ाने के बाद प्रदेश सरकार का भी पूरा जोर शत-प्रतिशत राजस्व वसूली पर है। स्मार्ट मीटर को राजस्व वसूली के लिए अहम कारगर देते हुए प्रदेश सरकार ने भी इसे लगाने के काम को तेज करने के निर्देश दिए हैं। उत्तर प्रदेश पावर कारपोरेशन लिमिटेड (यूपीपीसीएल) ने सभी डिस्कॉम से स्मार्ट प्रीपेड मीटर लगाने के काम में तेजी लाने को कहा है। इसके साथ ही एप मीटर को लेकर लोगों में फैलने वाली भ्रान्तियों को भी दूर करने को कहा है। कारपोरेशन का

गंगा का पानी पीने और आचमन योग्य नहीं है- एनजीटी

गंगा में सीवेज का पानी गिराया जा रहा है- एनजीटी

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में सीवेज के कारण गंगा मैली होती जा रही है। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने शनिवार को कहा कि गंगा का पानी आचमन योग्य नहीं रह गया है।

बता दें कि प्रदेश में सीवेज या दूषित पानी गंगा में बहाया जा रहा है। इसके कारण पानी की गुणवत्ता खराब हो रही है। इस पर असंतोष जाहिर करते हुए एनजीटी ने राज्य के मुख्य सचिव को एक हलफनामा दाखिल करने का निर्देश दिया। इसमें विभिन्न जिलों में प्रत्येक नाले, सीवेज और सीवेज शोधन संयंत्र (एस्पटीपी) के बारे में जानकारी देनी होगी।

राज्यों की रिपोर्ट को देखते हुए एनजीटी ने की टिप्पणी

एनजीटी ने इससे पहले गंगा में



प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण पर विचार करते हुए उत्तर प्रदेश समेत विभिन्न राज्यों से अनुपालन रिपोर्ट मांगी थी। 6 नवंबर के आदेश में एनजीटी अध्यक्ष जस्टिस प्रकाश श्रीवास्तव की पीठ ने कहा कि उत्तर प्रदेश की रिपोर्ट के अनुसार, प्रयागराज जिले में सीवेज शोधन में 128 एमएलडी (मिलियन लीटर प्रतिदिन) का अंतर है। इसके अलावा 25 नालों से गंगा में बिना शोधित सीवेज गिरता

है, जबकि 15 नालों से बिना शोधित सीवेज यमुना में बहता है।

पीठ में जस्टिस सुधीर अग्रवाल और विशेषज्ञ सदस्य एस्थिल वेल भी शामिल हैं। ट्रिब्यूनल ने कहा, 'हमने पाया है कि केंद्रीय नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) की 22 अक्टूबर की रिपोर्ट में बताए गए 326 नालों में से 247 नाले बिना शोधित 3,513.16 एमएलडी सीवेज गंगा और सहायक नदियों में गिरा रहे हैं।' इसके साथ ही



एनजीटी ने राज्य के मुख्य सचिव को हलफनामा दाखिल करने का निर्देश दिया है। पीठ ने कहा, 'हलफनामे में उन अल्पकालिक उपायों का भी जिक्र किया जाए, जो एस्पटीपी के पूरी तरह काम करने तक प्रत्येक जिले में नदी में बिना शोधित सीवेज बहाने से रोकने के लिए अपनाए जाएंगे।'

अधिक ताकतवर बनने की होड़ में जिम प्रतियोगिता में नाबालिग का टूटा हाथ

अमन लेखनी समाचार

निगोहा। निगोहा कस्बे में जिम के भीतर अधिक ताकतवर साबित करने वाली चल रही प्रतियोगिता के दौरान नाबालिग प्रतिभागी के हाथ की टूटी हड्डी दोस्तों ने दर्द से कराहा रहे साथी को निजी अस्पताल में भर्ती कराया। वही सूचना पाकर पहुंचे परिजनों ने जिम संचालक पर लगाया लापरवाही का आरोप अस्पताल तक संचालक के न पहुंचने पर परिजनों ने पूरे मामले की शिकायत निगोहा पुलिस से की है।

निगोहा के नटौली ग्राम प्रधान नीरज सिंह ने बताया बछरावां नीवा में रहने वाले भांजे सूर्यांसिंह निगोहा कस्बे के एक जिम ज्वाइन कर रखा था। प्रतिभागी को जिम अशक्त तक अधिक ताकतवर दिखने और बनने के लिए जिम परिसर में एक प्रतियोगिता का आयोजन किया। जिसमें जान जोखिम में डालने वाली प्रतियोगिता की अनुमति किसी परीजन से लेना उचित नहीं



समझा और उनके नाबालिग भांजे को प्रतियोगिता में शामिल कर लिया। और

इस प्रतियोगिता के दौरान उनके भांजे के हाथ की हड्डी के दो टुकड़े हो गए और जिम के भीतर ही दर्द से कराहते हुए गिर पड़ा इस दौरान जिम के भीतर अफरा तफरी मच गई और प्रतियोगिता में शामिल युवा मौके से भाग निकले इस संबंध में जब जिम संचालक से बात की गई तो उन्होंने बताया कि प्रतियोगिता के लिए उन्हें कोई अनुमति लेने की जरूरत नहीं है। और जोखिम के लिए पहले ही प्रतिभागियों को अवगत करा दिया जाता है निगोहा थाना प्रभारी अशोक गोड ने बताया नाबालिग के मामा नीरज से शिकायत की है जिम संचालक को बुलाया गया आगे कार्यवाही की जायेगी।

उपचुनाव को लेकर भाजपा-सपा में और तेज हुआ पोस्टर वार, कांग्रेस भी सियासी जंग में शामिल

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। उपचुनाव को लेकर बढ़ते तो कटेंगे नारे के बाद सोशल मीडिया पर छिड़े पोस्टर वार में भाजपा ने सपा पर सियासी हमले और तेज कर दिए हैं। भाजपा ने वर्ष 2018 में आई अमिताभ बच्चन व आमिर खान की फिल्म टमस ऑफ हिंदोस्तान के पोस्टर को तर्ज पर टग लाइफ शीर्षक से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर संचालक से बात की गई तो उन्होंने बताया कि प्रतियोगिता के लिए उन्हें कोई अनुमति लेने की जरूरत नहीं है। और जोखिम के लिए पहले ही प्रतिभागियों को अवगत करा दिया जाता है निगोहा थाना प्रभारी अशोक गोड ने बताया नाबालिग के मामा नीरज से शिकायत की है जिम संचालक को बुलाया गया आगे कार्यवाही की जायेगी।

उत्तर प्रदेश की नौ विधानसभा सीटों पर हो रहे उपचुनाव को लेकर लखनऊ में सपा और मुख्य विपक्षी दल सपा में जुबानी जंग के साथ ही सोशल मीडिया पर पोस्टर के जरिये एक-दूसरे की बखिया उधेड़ने की प्रतियोगिता तीखी होती जा रही है।



भाजपा ने एक्स पर आज का औरंगजेब शीर्षक नाम से जारी एक पोस्टर में सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव पर सीधा हमला किया है। पोस्टर में सपा संस्थापक मुलायम सिंह यादव को घर में बंधक बनाने व चाचा भतीजा में बंदरबांट को लेकर सपा अध्यक्ष को घेरा है। एक अन्य पोस्टर में भाजपा ने लिखा है यादव है सपा का कुशासन, जब अपराधियों के हाथ में था शासन। सपा पर हमलावर एक और पोस्टर में

लिखा गया है, चुनवाई बहुरूपियों से रहना सावधान, छलावा करते हैं चुनाव के दौरान, चुनाव के बाद बन जाते हैं हैवान। एक्स पर जीतेंगे तो लूटेंगे शीर्षक से भाजपा ने एक अन्य पोस्टर में लिखा है कि सैफई परिवार को जनता रही पहचान, जनता को फिर से लूटने का पाल रहे हैं प्लान। एक और पोस्टर में लिखा गया है कि समाजवादी दुष्कर्मियों का ठिकाना, बहन-बेटियों को है लाल टोपी वालों से बचाना।

सपा ने भी भाजपा को घेरा

सपा ने भी विभिन्न मुद्दों को लेकर पलटवार कर एक्स पर भाजपा को घेरा है। सपा यूपी का अपराधनामा धारावाहिक शीर्षक से राजधानी प्रदेश में हो रहे अपराधों को लेकर भाजपा सरकार को घेरे रही है। इसी कड़ी में सपा ने सरकार के करीबी एक अधिकारी को निशाने पर लेते हुए सारनाथ में जुआ की राशि लेकर चंपत होने की एक वीडियो का जिक्र कर लिखा है वही वाला लुटेरा। सपा अध्यक्ष ने एक पोस्टर में प्रदेश में खाद के संकट को लेकर भी भाजपा को घेरते हुए लिखा है कि बिजक रही है खाद ऊंचे दाम में, भ्रष्ट भाजपाइयों के गोदाम में। वही अब तक डरे हुए थे, अब हिले हुए हैं और कई अन्य पोस्टर के जिक्र करते हैं सपा लगातार भाजपा पर हमले कर रही है। कांग्रेस भी इस सियासी जंग में पीछे नहीं है। कानून व्यवस्था व भ्रष्टाचार के मुद्दों को लेकर कांग्रेस भी सोशल मीडिया पर लगातार भाजपा को घेरने में लगी है।

रोजगार सृजन में बस्ती जिला प्रदेश में अटवल

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की प्रतिबद्धता और प्रशासनिक सजगता से उत्तर प्रदेश का ग्रामीण परिवेश तेजी के साथ विकास की राह पर आगे बढ़ रहा है। मनरेगा योजना के माध्यम से सीएम योगी ने ग्रामीण क्षेत्रों को रोजगार उपलब्ध कराने, महिलाओं का सशक्तिकरण करने और बुनियादी सुविधाओं में सुधार लाने के लिए कई तरह के प्रयासों को मूर्तिरूप दिया है। सीएम योगी की अगुवाई में प्रदेश में 2024-25 के चालू वित्तीय वर्ष में अब तक 60.17 लाख परिवारों को गांव में रोजगार से जोड़ा गया है। रोजगार सृजन में बस्ती जिला प्रदेश में नंबर वन: प्रदेश के बस्ती जिले ने मनरेगा के तहत रोजगार सृजन में प्रदेश में शीर्ष स्थान प्राप्त किया है। बस्ती में अब तक 1,95,717 लोगों के सापेक्ष

1,95,714 परिवारों को गांव में रोजगार उपलब्ध कराया जा चुका है, जिससे 79,40,929 मानव दिवस का सृजन हुआ है। इस प्रयास के लिए बस्ती को प्रदेश में पहला स्थान प्राप्त हुआ है, जबकि आजमगढ़ और जौनपुर क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का स्पष्ट निर्देश है कि मनरेगा के तहत अधिक से अधिक मानव दिवस सृजित किए जाएं ताकि ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को अपने गांव में ही रोजगार मिल सके। ग्राम्य विकास आयुक्त जीएस प्रियदर्शी ने संबंधित अधिकारियों को यह निर्देश दिए हैं कि मनरेगा योजनाओं का क्रियान्वयन और बेहतर तरीके से हो ताकि ग्रामीण लोगों के लिए अधिक रोजगार सृजन हो सके। ग्रामीण विकास में बढ़ावा योजनाओं का समावेश: मनरेगा के अंतर्गत न केवल रोजगार बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों के समग्र विकास

के लिए कई योजनाओं का संचालन किया जा रहा है। इनमें रोजगार के साथ-साथ आवास, पेयजल, महिला सशक्तिकरण, सिंचाई, सड़क निर्माण और पौधरोपण जैसी महत्वपूर्ण योजनाएं शामिल हैं। इन योजनाओं का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों की समग्र प्रगति और लोगों के जीवन स्तर में सुधार करना है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सरकार ने मनरेगा को ग्रामीण विकास का महत्वपूर्ण साधन बना दिया है। उनके नेतृत्व में, उत्तर प्रदेश के गांवों में न केवल लोगों को रोजगार मिल रहा है बल्कि गांवों का ढांचा भी सशक्त हो रहा है। रोजगार के साथ-साथ बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता और सशक्तिकरण की दिशा में हुए प्रयासों से ग्रामीण क्षेत्र नई ऊंचाइयों की ओर अग्रसर हैं।

रेलवे ट्रेक पार कर रही महिला ट्रेन की चपेट में आई, मौत

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। खेत में धान की फसल काट रहे परिजनों को खाना देने जा रही बुद्ध महिला रेलवे ट्रेक पार करते समय ट्रेन की चपेट में आने से मौत हो गई। सूचना प्रगति और लोगों के जीवित रहने में सुधार करना है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सरकार ने मनरेगा को ग्रामीण विकास का महत्वपूर्ण साधन बना दिया है। उनके नेतृत्व में, उत्तर प्रदेश के गांवों में न केवल लोगों को रोजगार मिल रहा है बल्कि गांवों का ढांचा भी सशक्त हो रहा है। रोजगार के साथ-साथ बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता और सशक्तिकरण की दिशा में हुए प्रयासों से ग्रामीण क्षेत्र नई ऊंचाइयों की ओर अग्रसर हैं।



पुलिस ने महिला के शव की पहचान करा पंचनामा भर कर पोस्टमार्टम के लिए भेजने की प्रक्रिया शुरू की परंतु परिजनों ने शव की हालत देखते पोस्टमार्टम कराने से किया माना. मृताकुसुनीया के पति देशराज की तीन साल पहले ही मौत हो गई थी। मृताका के परिवार में बेटा अमर सिंह, सतीश, अनुज, और एक विवाहित बेटी अर्चना है। जिनका रोकर बुरा हाल है। देर शाम परिजनों ने शव का अंतिम संस्कार कर दिया।

यूपीएस शिक्षकों व कर्मचारियों के भविष्य के लिए नासूर

अमन लेखनी समाचार

20 साल तक एनपीएस की खूबिया गिनाते गिनाते लाखों कर्मचारियों का भविष्य अंधकारमय कर दिया अब नया शिगुफा है यूपीएस लेकर आई है यह एनपीएस से भी खराब व्यवस्था है इसीलिए अटेवा एनपीएस/यूपीएस का विरोध करता है और अटेवा के संघर्ष की बढौलत ही अभी तक सरकार वदर का ड्राफ्ट नहीं लेकर आ पाई। अटेवा निजीकरण के खिलाफ है इसलिए संस्थाओं का निजीकरण बंद हो, सरकारी संस्थाओं को मजबूत की जाए इससे निम्न और मध्यवर्ग मजबूत हो सके। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य महासंघ के एनपीएस से संबंधित मुद्दों को लेकर एनपीएस के विरोधियों ने कहा कि एनपीएस और सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों का बुढ़ापा अंधकारमय हो गया है और वही सरकार ने यूपीएस लाकर एक और नासूर पैदा कर दिया है जिसके कारण आज देश का शिक्षक, कर्मचारी, अर्द्धसैनिक बल का जवान सेवानिवृत्त होने के बाद दर-दर की ठोकें खाने को मजबूर है। सरकार

ने कहा कि पुरानी पेंशन शिक्षकों व कर्मचारियों व अर्द्धसैनिक बलों को जरूर मिलनी चाहिये क्योंकि पुरानी पेंशन उनकी सामाजिक सुरक्षा को मजबूत करती है। इस देश में सभी को समान रूप से पेंशन मिलनी चाहिये। मैंने पुरानी पेंशन पर एक शोधपत्र के माध्यम से सरकार को अपने सुझाव भी दिए हैं कि सभी कर्मचारियों को पुरानी पेंशन दी जा सकती है प्रदेश संगठन मंत्री संदीप वर्मा, जनार्दन शुक्ल व राधा प्यारी रावत ने सभी पदाधिकारियों से अनुशासन में रहने पर बल देते हुए कहा कि एक अनुशासित संगठन ही सफलता प्राप्त कर सकता है। प्रदेश महामंत्री डॉ. नीरजपति त्रिपाठी ने कहा कि 7 दिसंबर को डॉ राम आशीष सिंह शहीद दिवस पर स्वच्छता अभियान एवं श्रद्धांजलि सभा प्रत्येक जिला मुख्यालय पर मनाया जाएगा। आगामी संसद सत्र में एक कार्यक्रम दिल्ली में आयोजित

होगा, साथ ही 1 अप्रैल 2025 को पूरजोर तरीके से यूपीएस का विरोध करते हुए काला दिवस बनाया जायेगा उसके बाद लखनऊ में एक विशाल रैली की जायेगी। जो अब तक की सबसे ऐतिहासिक रैली साबित होगी। प्रदेश सलाहकार व कैडर प्रभारी ओम प्रकाश कनौजिया ने बताया लोगों को संघर्ष के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा और एक कोर कैडर टीम बनाई जाएगी। जो ब्लॉक ब्लॉक गठित होगी जो लोगों को इस आंदोलन में जोड़ने का कार्य करेगी प्रदेश मीडिया प्रभारी डॉ. राजेश कुमार ने कहा कि एक दिन का सांसद, विधायक पुरानी पेंशन पाने का हकदार है तो अपने जीवन का 30 से 40 वर्ष देने वाला शिक्षक, कर्मचारी व अर्द्धसैनिक बल का जवान भी पेंशन का हकदार है इसलिये सरकार पुरानी पेंशन बहाल कर इन्हें सामाजिक सुरक्षा दे।

स्वार्थ परक जीवन समाज को खोखला बना रहा - डिजिटल बाबा

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। आज हम केवल अपने सुख के लिए जीवन जीने लगे हैं। स्वार्थ परक जीवन हमें और समाज को खोखला करता जा रहा है। सरसवां अर्जुनगंज में आयोजित श्रीमद्भगवत कथा के 5वें दिन रविवार को यह विचार स्वामी राम शंकर महाराज (डिजिटल बाबा) ने व्यक्त किए। कृष्ण जन्मोत्सव और भगवान कृष्ण की बाल लीला का वर्णन करते हुए स्वामी जी ने कहा कि भगवान कृष्ण गुरुकुल में जाकर अध्ययन किया। यहां गुरुजन अपने शिष्यों को मनुष्य बनने के लिए प्रेरित करते थे। सारिक और आध्यात्मिक दोनों विषयों का सम्यक ज्ञान देते थे। लेकिन आज के



दौर में विद्यार्थियों को केवल धनोपाजन में दक्ष बनने के लिए शिक्षा दी जा रही है। यह हमें स्वार्थी बना रहा है। इस मौके पर जौनपुर पूर्व सांसद धनंजय सिंह, सरोजनी नगर विधायक राजेश्वर सिंह, सहकारी बैंक चेयरमैन वीरेंद्र प्रताप सिंह, सीताराम सिंह, कुलवर्त सिंह चौहान, सुरेंद्र प्रताप सिंह, राममूर्ति सिंह, राम बिलास सिंह, अतर सिंह, विपुल सिंह, अमन सिंह चौहान समेत बड़ी संख्या गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

संक्षेप

दबंगो ने महिला व उसके पुत्र-पुत्री को जमकर मारा पीटा

अमन लेखनी समाचार

सुमेरपुर, उन्नाव। थाना बिहार अन्तर्गत ममरेजपुर पोस्ट पन्हन निवासिनी लीलावती पत्नी स्वर्नश प्रसाद दर्जी ने थाना बिहार को तहरीर देते हुए बताया कि वह शुक्रवार की शुबह 6 बजे धान पीटकर घर आ रही थीं ।इतने में अकारण अमित पुत्र मथुरा प्रसाद बढई, सोमनाथ पुत्र मंझिल बढई, मथुरा प्रसाद पुत्र मंझिल बढई ये उपरोक्त तीनों लोग मुझको गिरा कर लात धूसों से मारा पीटा जब मेरी लड़की शालिनी व लड़का रितेश बचाने पहुँचे तो उनको भी उपरोक्त लोगो ने गिरा कर लात धूसों से मारा पीटा जिससे मुझे व मेरी लड़की, शालिनी व मेरे लड़के रितेश के काफी अन्दरुनी चोट आयी है ।थाना प्रभारी सुरेश चंद्र मिश्रा ने बताया तहरीर व जांचोपरांत मुकदमा दर्ज कर विधिक कार्यवाही को जा रही है ।

पुलिस अधीक्षक ने 29 सिपाहियों को किया लाइन हाजिर

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। जनपद के पुलिस अधीक्षक दीपक भूकर ने बड़ी कार्रवाई करते हुए जिले के 12 पुलिस थानों से कुल 29 सिपाहियों को लाइन हाजिर कर दिया है। यह कार्रवाई तब की गई जब यह सिपाही लंबे समय से एक ही थाने में तैनात थे और उन पर स्थानीय जनता द्वारा कई शिकायतें प्राप्त हो रही थीं। पुलिस प्रशासन ने इन सिपाहियों के खिलाफ गोपनीय जांच की और दोषी पाए जाने पर उन्हें लाइन हाजिर कर दिया।एसपी दीपक भूकर ने इस संदर्भ में बताया कि यह कदम जनता की सुरक्षा और पुलिस प्रशासन की कार्यप्रणाली को सुधारने के लिए उठाया गया है। उन्होंने बताया कि इन सिपाहियों के खिलाफ शिकायतें स्थानीय स्तर पर आम थीं, और शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए उनके खिलाफ जांच की गई।कुछ आरोपों में लापरवाही, भ्रष्टाचार और जनता के साथ गलत व्यवहार को बताने सामने आई। इस पर सख्त कार्रवाई की गई है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि पुलिस का कार्य निष्पक्ष और ईमानदारी से हो।एसपी ने अपने आदेश में कहा है कि तत्काल प्रभाव से इन सिपाहियों को लाइन हाजिर कर दिया गया है और उन्हें अन्य स्थानों पर तैनात किया जाएगा। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि जिले के बाकी थानों में तैनात पुलिसकर्मियों की भी जांच की जा रही है और अगर किसी के खिलाफ भी शिकायतें मिलतीं तो उस पर भी कठोर कार्रवाई की जाएगी। गौरतलब है कि पिछले कुछ समय से उन्नाव में पुलिस के खिलाफ शिकायतों की संख्या में बढ़ोतरी देखी जा रही थी। विशेषकर, जनता का आरोप था कि कुछ पुलिसकर्मी अपने कर्तव्यों में लापरवाह हैं और भ्रष्टाचार के आरोपों से भी घिरे हुए हैं।। ऐसे में एसपी की यह कार्रवाई उन पुलिसकर्मियों को संदेश देती है कि अगर वे जनता की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरेंगे तो उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

कटखने बांदरो के आतंक से नगरवासी भयभीत

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। गंगाघाट नगर पालिका परिषद क्षेत्र में इन दिनों पागल और कटखने बांदरो के आतंक बढ़ गया है, जिससे स्थानीय लोग ख़ासे परेशान हैं। गंगाघाट के कई इलाकों, जैसे कि राजधानी मार्ग, धोबिन पुलिया, सोख़ा आश्रम, अंबिकापुर, गोपीनाथपुरम, नेहरु नगर, रश्मि लोक, कंचन नगर और आजाद नगर में बांदरों ने उत्पत मचा रखा है। बांदरों ने न केवल छोटे बच्चों बल्कि बुजुर्गों तक को अपना शिकार बना लिया है, और कई लोग इन बांदरों के हमले में घायल हो चुके हैं। लोगों ने बांदरों के हमले का सीसीटीवी फुटेज भी निकलवाया है, जिसमें अचानक एक युवक के ऊपर आकर बांदर बैठ जाता है। युवक किसी तरह अपनी जान बचाता है। पास खड़ी बच्ची डरकर भागती है।स्थानीय लोगों के मुताबिक, बांदरों ने कई बार झपट्टा मारकर लोगों को काटा है, जिससे घायल हुए व्यक्तियों में नितेश बाजपेयी, श्याम, ओम सिंह, सोनाक्षी,

यातायात जागरूकता पर विभिन्न कलाओं की प्रतियोगिता आयोजित

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। प्रतियोगिता में जनपद के पाँच विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया, जिसमें पैट्रियाट इंटर कॉलेज, किंगसन इंटर कॉलेज, गुरु नानक इंटर कॉलेज, विवेकानंद इंटर कॉलेज व चंद्रशेखर इंटर कॉलेज से 09-09 बच्चों ने प्रत्येक प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया। जिसमें तीन वि्वज में, तीन कला में, तीन निबंध प्रतियोगिता में प्रतिभागी रहे। कार्यक्रम की शुरूआत पुलिस अधीक्षक महोदय ने बच्चों से वि्वज के प्रश्न पूछ कर किया और सभी प्रश्न यातायात पर आधारित थे। सभी बच्चों ने बड़ी रोचकता से जवाब दिया पुलिस अधीक्षक ने यातायात के नियमों के महत्व और अपने जीवन की सुरक्षा बनाये रखने हेतु सभी नियमों का सावधानी पूर्वक पालन करने की सलाह दी। छात्र-छात्राओं द्वारा प्रतियोगिता में कला के माध्यम से उकेरी गयी आकृतियों को जीवन में उतारने की सलाह दी और बताया कि चालान करना पुलिस का उद्देश्य नहीं है अपितु सावधानी बरतना और आप



सभी को यातायात नियमों के प्रति सजग करना हमारा ध्येय है। जिससे भावी दुर्घटना से बचा जा सके। आये हुए सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं व उपस्थित सलाहकार टीम के प्रभारी डॉ आशीष सहित तबस्सुम नफीस, डॉ शशिर्जना, सबीहा उमर, संजय चौरसिया व शिल्पी श्रीवास्तव, सहयोगी अंकित, शिवेन्द्र व स्वामििक जी का आभार प्रकट किया। प्रतियोगिता में 50 प्रश्नों की प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम रखा गया और जिन बच्चों ने कला प्रतियोगिता में भाग लिया उनमें सभी बच्चों ने पेंटिंग ,यातायात, सड़क सुरक्षा का विषय ही प्रमुख रूप से रखा था। छात्र-छात्राओं

तमंचे के नोक पर बद्दमाशो ने दिन दहाड़े अधिका के घर से लाखो की नगदी समेत लुटे जेवरात

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। सदर कोतवाली क्षेत्र के किला चौकी के अंतर्गत जेर खिड़की मोहल्ले में एक इनकम टैक्स के अधिवक्ता के घर तीन बद्दमाश क्लाइट बनकर आए। कुछ देर बातचीत के बाद तमंचे के बल पर घर से नकदी समेत गहना लूट ले गए। घटना की जानकारी के बाद एसपी समेत तमाम पुलिस बल मौके पर पहुंचा। जांच-पड़ताल की जा रही है। खुलासे के लिए 5 टीमों का गठन किया है। पुलिस आसपास के सीसीटीवी कैमरे खंगाल रही है।जानकारी के अनुसार जेर खिड़की मोहल्ला छिपियाना निवासी अधिवक्ता सैयद कैमुल हसन जैदी पुत्र गुलामुन्न जैदी के घर पर परिवार की सुह्रह करीब 9 बजे 3 अज्ञात बद्दमाश क्लाइट बनकर आए।किसी मसले को लेकर बात करते रहे। इसी दौरान बद्दमाशों ने तमंचा निकालकर उनके सिर पर सट दिया और घर में रखी करीब 1 लाख से अधिक की

नकदी दो मोबाइल, लाखों रुपए की जेवर की लूटपाट करने के बाद घर से भाग निकले।घटना के बाद इसकी जानकारी अधिवक्ता ने कोतवाली पुलिस को दी। दिनदहाड़े लूटपाट की घटना होने की सूचना मिलते ही एसपी दीपक भूकर, अपर पुलिस अधीक्षक अखिलेश सिंह, सीओ सिटी सोमन सिंह समेत तमाम पुलिस बल मौके पर पहुंच घटनास्थल का निरीक्षण किया है।पीड़ित ने एसपी को घटना के विस्तृत जानकारी दी है।एसपी दीपक भूकर ने बताया कि लूटपाट की टैक्स सामने आई है।पीड़ित अधिवक्ता से घटना को लेकर जानकारी हासिल की गई है। उन्होंने घटना कारित करने वालों को पहचानने से इनकार किया है। इनकम टैक्स का किसी काम से संबंधित बद्दमाश बात कर रहे थे। इसके बाद घटना को अंजाम दिया है।खुलासे के लिए 5 टीमों का गठन किया गया है। सीसीटीवी कैमरा की खोजबीन की जा रही है। जल्द ही घटना का खुलासा किया जाएगा।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना के तहत कार्यक्रम आयोजित

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। महिला एवं बाल विकास विभाग उत्तर प्रदेश द्वारा आयोजित किए जा रहे रमिशन शक्तिर विशेष अभियान फेज-5 के तहत बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना के प्रचार-प्रसार हेतु जिले में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।इस अभियान के तहत जिलाधिकारी, मुख्य विकास अधिकारी प्रेम प्रकाश मीणा और जिला प्रोबेशन अधिकारी क्षमानाथ राय ने नुक्कड़ नाटक के माध्यम से आमजनमानस को जागरूक करने के लिए प्रचार-प्रसार वैन को हीरू झंडी दिखाकर रवाना किया।सीडीओ प्रेम प्रकाश मीणा ने कहा कि रमिशन शक्तिर अभियान महिलाओं और बच्चों के कल्याण के लिए एक महत्वपूर्ण पहल है। इसके माध्यम से समाज में

महिलाओं के अधिकारों और उनके संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाने का उद्देश्य है।उन्होंने कहा कि बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना का उद्देश्य केवल बेटियों के अधिकारों को बढ़ावा देना नहीं है, बल्कि समाज में लैंगिक समानता की भावना को भी सशक्त करना है।जिला प्रोबेशन अधिकारी क्षमानाथ राय ने भी इस अभियान की अहमियत को बताते हुए कहा कि इस प्रकार के प्रचार-प्रसार कार्यक्रम से आमजन को महिला सशक्तिकरण और बाल संरक्षण के विषय में जानकारी मिलती है। उन्होंने बताया कि नुक्कड़ नाटक के माध्यम से महिलाओं के खिलाफ हो रहे अत्याचारों, बाल विवाह, शिक्षा के अधिकार और कन्या श्रृण हत्या जैसी समस्याओं के बारे में जागरूकता फैलाना अभियान का मुख्य उद्देश्य है।इस प्रचार वैन में बड़े-बड़े पोस्टर और बैनर

लगाए गए थे, जिनमें बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना की जानकारी दी गई थी। इसके अलावा, नुक्कड़ नाटक के जरिए गांव-गांव में महिलाओं के अधिकार, शिक्षा, सुरक्षा और सम्मान पर आधारित संदेश दिए जाएंगे। प्रचार वैन का यह अभियान जिले के विभिन्न इलाकों में जाएगा। लोग नुक्कड़ नाटक और अन्य गतिविधियों के माध्यम से इस अभियान से जुड़ी जानकारी प्राप्त करेंगे।इस अवसर पर डीएम प्रेम प्रकाश मीणा ने सभी संबन्धित अधिकारियों और कर्मचारियों से इस अभियान को सफल बनाने के लिए सक्रिय रूप से काम करने की अपील की। उन्होंने कहा कि समाज में जागरूकता फैलाना एक जिम्मेदारी है और सभी को मिलकर यह सुनिश्चित करना है कि महिलाएं और लड़कियां अपनी पूरी क्षमता के साथ आगे बढ़ सकें।

ड्रोन सर्वे से अवैध भूमि पर खेती करने का हुआ खुलासा

अमन लेखनी समाचार

फतेहपुर चौरासी, उन्नाव।ब्लॉक क्षेत्र में कल्याणी नदी की भूमि पर अवैध कब्जा और खेती करने का मामला सामने आया है। यह खुलासा जिला प्रशासन द्वारा किए जा रहे ड्रोन सर्वे के दौरान हुआ।सर्वे में आठ गांवों के आठ किलोमीटर क्षेत्र में निरीक्षण किया गया, जिसमें पाया गया कि करीब पांच किलोमीटर क्षेत्र में किसानों ने नदी की भूमि पर अवैध रूप से खेती की हुई है।। अन्य हिस्सों में भी अतिक्रमण के प्रमाण मिले हैं।प्रशासन ने इस मामले में सख्त कार्रवाई करने का निर्णय लिया है और मुख्य उद्देश्य कल्याणी नदी को उसके पुराने स्वरूप में बहाल करना है, ताकि जलधारा का प्रवाह सुचारु रूप से हो सके। सर्वे अभी भी जारी है, और आने वाले दिनों में अधिक गांवों में अतिक्रमण की स्थिति का पता चलने की संभावना है।।अवैध खेती की स्थिति का खुलासा कल्याणी नदी पर हुए इस अतिक्रमण की पुष्टि के लिए प्रशासन ने ड्रोन सर्वे का सहारा लिया।सर्वेय प्रशांत कुमार

छोटे लाल, पुलिस लाइंस से प्रतिसार निरीक्षक श्री अब्दुल रशीद व कॉलेज के शिक्षकों में पैट्रियाट इंटर कॉलेज से अजय अवस्थी, उमाकांत श्रीवास्तव, गुरु नानक इंटर कॉलेज से रेखा पांडे पूर्णिमा सिंह चंद्रशेखर इंटर कॉलेज से नेहा निगम हंस कुमारी मैम विवेकानंद इंटर कॉलेज से पारस और अर्दित मैम किंगसन इंटर कॉलेज से अहमद मीनिश सर उपस्थित रहे। डॉ आशीष ने बच्चों को बड़ी रोचकता से कार्यक्रम की तैयारी करायी। प्रतियोगिता में कला व निबंध के पुरस्कारों में प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार का निर्णय की घोषणा पुलिस अधीक्षक द्वारा 30 नवंबर 2024 को समापन के अवसर पर की जाएगी।क्विज प्रतियोगिता में प्रथम स्थान विवेकानंद इंटर कॉलेज के छात्र आनुष्मन, द्वितीय स्थान किंगसन इंटर कॉलेज के छात्र वैभव व तृतीय स्थान चंद्रशेखर इंटर कॉलेज के छात्र आदित्य अवस्थी ने प्राप्त किया। कार्यक्रम में पुलिस अधीक्षक महोदय द्वारा प्रभारी यातायात श्री भवन सिंह मौर्य व समन्वयक डॉक्टर आशीष श्रीवास्तव को कार्यक्रम सफल कराने हेतु भूरि-भूरि प्रशंसा की गई।

युवक ने थाने में तैनात एक दरोगा पर लगाए गंभीर आरोप

अमन लेखनी समाचार

सुमेरपुर, उन्नाव। बिहार थाना क्षेत्र के सहिला गांव के निवासी सुशील कुमार तिवारी 52वर्ष ने थाना बिहार में तैनात दरोगा केके यादव पर गंभीर आरोप लगाए हैं। तिवारी ने आरोप लगाया कि पारिवारिक विवाद के दौरान दरोगा ने उन्हें जमीन के मामले में बुलाया और फिर उनके साथ मारपीट की। इसके बाद तिवारी ने यह भी आरोप लगाया कि दरोगा ने उन्हें झूठे मुकदमे में फंसाने की धमकी दी। इस हमले में तिवारी को गंभीर चोट आई हैं, जिसमें उनकी आंख और हाथ पर गहरे जख्म हुए हैं। तिवारी ने बताया कि उनका और उनके परिवार का एक जमीन को लेकर पारिवारिक विवाद चल रहा था। आरोप है कि दरोगा केके यादव ने इस विवाद को सुलझाने के नाम पर उन्हें अपने कार्यालय बुलाया, लेकिन वहां जाकर उन्हें शारीरिक

प्रताड़ना का सामना करना पड़ा। तिवारी का कहना है कि न सिर्फ उनके साथ मारपीट की गई, बल्कि दरोगा ने उन्हें झूठे मामलों में फंसाने की धमकी भी दी। इस घटना में उनकी आंख और हाथ पर गंभीर चोटें आईं, जिसके बाद उन्हें इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया।इस पूरी घटना के बाद, तिवारी ने उन्नाव के एसपी को एक शिकायती पत्र सौंपा है और आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की है। तिवारी ने कहा कि दरोगा के इस कृत्य ने न केवल उन्हें बल्कि पूरे गांव के लोगों को चिंता में डाल दिया है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि इस मामले में न्याय नहीं मिलता, तो वे और उनके परिवार उच्चाधिकारियों तक जाएंगे और अपनी शिकायत दर्ज कराएंगे। वहीं इस मामले में बिहार थाना के प्रभारी सुरेश चंद्र मिश्र का कहना है कि यह आरोप बेबुनियाद हैं और इस संबंध में जांच की जा रही है।

कांस्य पदक जीत कर विद्यालय सहित जनपद का नाम किया रेशन

अमन लेखनी समाचार

बांगरमऊ, उन्नाव। क्षेत्र के संडौला मार्ग स्थित आर एस पब्लिक स्कूल की ताइक्वांडो टीम ने कानपुर में चल रही इंटर स्कूल ताइक्वांडो चैंपियनशिप में विभिन्न प्रकार की कैटेगरी में स्वर्ण, रजत एवं कांस्य पदक जीत कर विद्यालय सहित जिले का नाम रेशन किया है। ताइक्वांडो एसोसिएशन के अध्यक्ष दीपक चौरसिया ने सभी विजेता छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया।कानपुर ताइक्वांडो एसोसिएशन के तत्वावधान में सर पदमपीए सिंहानियां एजुकेशन सेंटर में आयोजित 18 वीं इंटर स्कूल ताइक्वांडो चैंपियनशिप में पदक जीतने वाले बच्चों में आस्था यादव एवं राज ने स्वर्ण पदक एवं शालू व अर्णव सिंह ने रजत तथा अथर्व पटेल ने कांस्य पदक जीता। इस अवसर पर ताइक्वांडो एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री चौरसिया द्वारा विजेता छात्र-छात्राओं

श्याम महोत्सव का आयोजन, भक्तो ने भजन कीर्तन कर लिया आनंद

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। शनिवार रात राजधानी मार्ग स्थित एक गेस्ट हाउस में श्री श्याम जी नवयुवक मित्र मंडल के तत्वावधान में भव्य रश्री श्याम महोत्सव र का आयोजन किया गया। इस महोत्सव में श्रद्दालुओं ने बाबा श्याम की भक्ति में डूबकर भजन-कीर्तन का आनंद लिया और पूरी रात भक्ति के रंग में रंगे रहे।

कार्यक्रम की शुरूआत मंगला आरती से हुई, जिसके बाद बाबा श्याम के दिव्य विग्रह का अलौकिक श्रृंगार किया गया। इस अवसर पर श्रद्दालु बाबा के चरणों में भक्ति में लीन हो गए, और भव्य आयोजन की शुरूआत से ही माहौल भक्तिमय हो गया।जयपुर से आए आयुष सोमानी की भव्य प्रस्तुति इस महोत्सव में विशेष आकर्षण का केंद्र रहे जयपुर से आए प्रसिद्ध भजन गायक आयुष सोमानी, जिनकी आवाज में गाए गए भव्य भजन ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने रखाट्वाले की भक्ति गीत र प्रस्तुत किया, जिस पर श्रद्दालु झूमते हुए भक्ति में डूब गए।

इसके बाद, रसावरी सूरत पर मोहन दिल दिवाना हो गयार जैसे भक्ति गीतों ने माहौल को और भी भव्य बना दिया।भजन गायिका सुषिता तिवारी ने भी अपनी मधुर आवाज से महफिल में समा बांध दिया। उनके द्वारा गाए गए भक्ति गीत रतेरी मुरली की मीठी-मीठी तान रे, मैं तो हो भाई कुर्बान रेह पर श्रद्दालु झूमते रहे और भावविभोर हो गए। इसके बाद, कानपुर से आए सोनू सुरीले ने श्याम नाम का सारे जग में मचा है हल्ला, तेरा बिगड़ा बनेगा कामर जैसे भक्ति गीतों से श्रोताओं को झूमने पर मजबूर कर दिया। उनका रत् श्याम नाम जप ले, श्याम तू एक-एक भक्त की खबर रखता हैर गीत श्रोताओं के दिलों में गहरे तक समा गया।

विशाल कीर्तन और श्याम रसोई का आयोजन इस कार्यक्रम में एक विशेष आकर्षण था रश्याम रसोई, जिसमें श्रद्दालुओं को प्रसाद के रूप में स्वादिष्ट व्यंजन वितरित किए गए। इसके साथ ही, विशाल कीर्तन का आयोजन भी हुआ, जिसमें श्रद्दालुओं ने बड़े उत्साह से भाग

पति-पत्नी के 27 विवादित जोड़ो की सकुशल की गयी विदाई

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। दीपक भूकर पुलिस अधीक्षक के कुशल निर्देशन में सभी थानों में स्थित महिला हेल्प डेस्क व परिवार परामर्श केन्द्र में पति-पत्नी के विवादित जोड़ों को बुलाया गया, परिवार परामर्शदाताओं एवं महिला हेल्पडेस्क की टीम द्वारा उनकी काउंसलिंग करते हुए उनके बीच उपजे विवाद को खत्म कराया गया तथा परिवार को टूटने से बचाया। तदोपरान्त महिला थाना से 08, परिवार परामर्श केन्द्र से 07, थाना अचलगंज से 03 थाना बेहटा मुजावर, थाना बांगरमऊ, थाना गंगापुर से 02-02 व थाना औरास,थाना फतेहपुर चौरासी,थाना हसनगंज से 01-01 जोड़े को बिना विवाद साथ रहने के वादे का साथ विदा किया गया।उपरोक्त पुनीत कार्य में डा0 आशीष श्रीवास्तव प्रभारी परिवार परामर्श समिति एवं

अनियंत्रित ट्रैक्टर पलटा बाल बाल बचा चालक

अमन लेखनी समाचार

बीधापुर, उन्नाव। खेत जोतकर देर रात पर वापस जाते समय अनियंत्रित ट्रैक्टर रोड से नीचे खती में जा गिरा चालक ने कूद कर अपनी जान बचाई बाबा सगरव थाना क्षेत्र के अंतर्गत ग्रामचौर घटिया मन्नर डुली खेड़ा निवासी किसान खेत जोत कर देर रात घर आ रहा था कि अनियंत्रित ट्रैक्टर रोड से नीचे खती में जा गिरा ट्रैक्टर रोड से नीचे पलटता हुआ खती में पलट गया उसके चारों पहिया ऊपर हो गए खती होने के कारण बीच में झइवर के स्थान पर खाली स्थान होने के कारण चालक के लोगों ने बताया कि

खड़े कंटेनर में पीछे से घुसी कार, पिता व दो पुत्रों की मौत

अमन लेखनी समाचार

हसनगंज, उन्नाव। थाना क्षेत्र के आगरा एक्सप्रेस वे पर मटरिया गांव के सामने किनारे खड़े कंटेनर में तेज रफ्तार स्कार्पियो पीछे से घुस गई जिसमें सवार तीन युवक गंभीर रूप से घायल हो गए जिन्हें यूपीका की टीम ने बाहर निकाल कर लोक बंधु अस्पताल लखनऊ में भर्ती कराया जहां तीनों की मौत हो गई। स्कार्पियो सवार गाजियाबाद से गया बिहार जा रहे थे गाजियाबाद निवासी संजय 50 वर्ष अपने दो पुत्र गौरव 30 व सौरभ 35 के साथ स्कार्पियो से आगरा एक्सप्रेस वे से होते हुए पंथा बिहार जा रहे थे। तभी मटरिया गांव के सामने सुबह सात बजे के करीब आगरा एक्सप्रेसवे पर किनारे खड़े कंटेनर में पीछे से स्कार्पियो घुस गई। जिससे तीनों लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। सूचना पर पहुंची यूपीडा और पुलिस टीम घायलों को लोकबंधु हॉस्पिटल लखनऊ ले गई। जहां तीनों की मौत हो गई।मोहान चौकी इंजांच अनिल कुमार साहू ने बताया कि तीन लोग घायल हुए हैं।जिनकी लखनऊ के लोकबंधु हॉस्पिटल में मौत हुई है। मृतक मूल रूप से बनरा ढाकली जिला गया

लिया और एक स्वर में भजन गाए। कार्यक्रम के दौरान रनिशान उत्सव और फूलों की होलीर जैसे आयोजन भी धूमधाम से हुए, जो श्रद्दालुओं के बीच विशेष रूप से आकर्षण का केंद्र बने।

कार्यक्रम का समापन महाआरती के साथ हुआ, जिसमें सभी भक्त भावुक और अभिभूत थे। इस आयोजन ने हर किसी को बाबा श्याम के आशीर्वाद से निहाल कर दिया।इस अवसर पर प्रमुख रूप से सचिन सिंह, राहुल शुक्ला, निलेश सेनी, त्रिभुवननाथ शुक्ला, शोभित सिंह, मनोज मिश्रा समेत अन्य कई श्याम प्रेमी उपस्थित रहे।

सभी ने इस भव्य महोत्सव को सफल बनाने के लिए अपनी सहभागिता दी और आयोजन का भरपूर आनंद लिया।श्रद्दालुओं ने इस महोत्सव को शानदार बताते हुए आयोजकों को धन्यवाद दिया और कहा कि इस आयोजन ने श्याम भक्ति के रंग में सभी को रंग दिया और बाबा श्याम के आशीर्वाद से उनके जीवन में सुख-शांति की बहार आई।

अनियंत्रित ट्रैक्टर पलटा बाल बाल बचा चालक



सलाहकारों में अबसार अली, डा0 सगीर अहमद शिल्पी श्रीवास्तव, तबस्सुम नफीस, सबीहा उमर, डा0 शशिर् रंजन अगिनहोत्री, डा0 एस.के पाण्डेय रामसेनही यादव संजय चौरसिया व सहयोगी शिवेन्द्र अंकित रुचवशी स्वास्तिक मिश्रा तथा पुलिस टीम में प्रभारी निरीक्षक परिवार परामर्श केन्द्र संतोष कुमार सिंह, थानाध्यक्ष महिला थाना अर्चना उप निरीक्षक शहीम उपासना , पूजा शर्मा, पूजा, पूजा यादव,सोनी मिश्रा शकुंतला लक्ष्मी सिंह, अंजली शर्मा, शशि वर्मा सोनम, अन्का यादव का विशेष योगदान रहा।

अनियंत्रित ट्रैक्टर पलटा बाल बाल बचा चालक



मामूली चोटे आई जिसका वीडियो और फोटो सोशल मीडिया पर वायरल हो रही हैं।

खड़े कंटेनर में पीछे से घुसी कार, पिता व दो पुत्रों की मौत



बिहार के रहने वाले थे जो गाजियाबाद में रहकर पढ़ाई व जांब करते थे मृतक सौरभ बिहार में सरकारी स्कूल में टीचर था। मृतक सौरभ का 18 नवंबर को तिलक व 8 फरवरी 2025 को शादी थी। जिसकी तैयारी में परिवार लगा था। मृतक सौरभ व गौरव तीन भाई थे जिसमें सबसे छोटा मानव राजपूत है, घर में 5 सदस्य थे जिसमें छोटा बेटा मानव व मां बेबी देवी रोरों कर बेहाल हो गए। मृतक गौरव कार चला रहा था झपकी लगने की वजह से ट्रैलर में स्कार्पियो पीछे से जा घुसी।



संक्षेप

घर में घुसकर किशोरी से छेड़छाड़

अमन लेखनी समाचार

मोदीनगर, मोदीनगर में मुरादनगर की आयुध निर्माणा फैक्ट्री परिसर की एक कॉलोनी में सुबह करीब नौ बजे घर में घुसकर पड़ोसी ने 14 वर्षीय किशोरी के साथ अश्लील हरकत कर छेड़छाड़ की। वारदात के समय घर पर कोई मौजूद नहीं था। किशोरी की मां ने इस संबंध में थाने में तहरीर दी है। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। आयुध निर्माणा फैक्ट्री परिसर की एक कॉलोनी निवासी एक महिला परिवार सहित रहती है। महिला ने बताया कि वह किसी काम से अस्पताल गई थी और घर पर 14 साल की पुत्री व पुत्र मौजूद थे। बेटा नहा रहा था और बेटों का कमर रही थी। इसी बीच एक व्यक्ति ने दरवाजा खटखटाया। आरोप है कि बेटों जब दरवाजा खोला तो आरोपी ने अश्लील हरकत करनी शुरू कर दी। विरोध करने पर किशोरी को मारपीट कर घायल कर दिया। इतना ही नहीं यह बात किसी को बताने पर परिवार सहित जान से मारने की धमकी दी। किशोरी ने अपनी मां को आपबीती सुनाई। महिला ने इस संबंध में मुरादनगर थाने में तहरीर दी है। एसीपी सिद्धार्थ गौतम ने बताया कि महिला की तहरीर के आधार पर रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है।

सरधना में हमलावरों ने चलाई ताबड़तोड़ गोलियां

अमन लेखनी समाचार

सरधना, सरधना क्षेत्र के मोहल्ला कमरा नवाबगंज में रास्ता मांगने पर छह से अधिक हमलावरों ने युवक की पिटाई कर दी। लोगों ने उसे बचाया। इसके बाद पीड़ित घर आ गया। इसी बीच आरोपी उसके घर के सामने पहुंच गए। सड़क पर खड़े होकर ताबड़तोड़ फायरिंग कर दी। जिसमें बालकनी में खड़े पति-पत्नी बाल बाल बच गए। सूचना पर भारी पुलिस बल मौके पर पहुंचा कि क्षेत्राधिकारी ने भी पहुंचकर घटना की जानकारी ली। इस संबंध में पीड़ित अरशद आरोपियों के खिलाफ तहरीर दी है। अरशद उर्फ छोटू ने बताया कि वह अपनी कार से किसी कार्य के लिए गली से बाहर निकल रहा था, तो गली के मोड़ पर कुछ दबंग लोग मोटरसाइकिलों पर बैठे हुए थे। छोटू ने बताया कि उसने उनको वहां से हटकर रास्ता मांगा तो आरोपियों ने उसे कार से बाहर खींच लिया। उसके साथ मारपीट कर दी। जिस पर वहां मौजूद कुछ लोगों ने बीच बचाव कर दिया। इसके बाद छोटू अपने घर आकर बैठ गया। इसी बीच आरोपी अपने कई साथियों को लेकर वहां पहुंचे और फायरिंग कर दी। इससे बालकनी में खड़े पति-पत्नी दोनों बाल-बाल बच गए। बताया कि आरोपियों ने गली में खड़े होकर काफी देर तक हंगामा किया। गाली गलौच करते रहे बड़ी मुश्किल से लोगों के आ जाने पर आरोपी वहां से चले गए। इसके बाद पुलिस ने पहुंचकर जानकारी प्राप्त की। वहीं गली चलने की सूचना पर क्षेत्राधिकारी संजय जयसवाल भी घटनास्थल पर पहुंचे और मामले की जानकारी ली। पुलिस आरोपियों तक पहुंचने के लिए सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है।

बिजनौर में बाइक चोर गैंग के 5 आरोपी गिरफ्तार

भेजा जेल, चोरी की 4 बाइक समेत पाटर्स बरामद

अमन लेखनी समाचार

बिजनौर, बिजनौर के मंडावर पुलिस ने बाइक चोर गैंग के पांच सदस्यों को गिरफ्तार किया। पुलिस ने इनके कब्जे से चोरी की चार बाइक और बाइकों के पाटर्स बरामद किए हैं। पुलिस सभी आरोपियों का चालान कर जेल भेजने की कवायद में जुट गई। दरअसल बिजनौर मंडावर थाना क्षेत्र में हाल ही में बाइक चोरी की घटनाएं बढ़ रही थी। जिसके चलते पुलिस ने बाइक चोर गैंग के पांच सदस्यों को गिरफ्तार किया है। पुलिस लाइन के कब्जे से चोरी की गई चार बाइक और बाइकों के पाटर्स बरामद किए। हाल ही में मण्डावर क्षेत्र के गांव सिमली निवासी नरेश, तिमरपुर निवासी लाल सिंह और

इन्स्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स के राष्ट्रीय अध्यक्ष का किया गया अभिनन्दन

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। गोडा थाना क्षेत्र स्थित के इन्स्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (ईडिया) के नव निर्वाचित नेशनल प्रेसीडेंट श्री वी.बी. सिंह के गोरखपुर आगमन पर गोडा स्थित इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड मैनेजमेंट (आई.टी.एम.) में गोरखपुर लोकल सेंटर द्वारा उनका हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड मैनेजमेंट के निदेशक प्रो. (डा.) एन.के.सिंह ने सिंह का स्वागत करते हुए कहा यह गौरव उत्तर-प्रदेश को 28 वर्षों बाद मिला है जब 104 वर्ष पूर्व स्थापित इंजीनियरिंग संस्था का नेशनल प्रेसीडेंट उत्तर-प्रदेश का इंजीनियर चुना गया है। इससे पूरे देश में प्रदेश का सम्मान बढ़ा है। यू.पी. बोर्ड ऑफ टेक्निकल एजुकेशन एवं बाबा साहब भीमराव अंबेडकर केन्द्रीय



विश्वविद्यालय, लखनऊ की बिल्डिंग कमेटी के सदस्य हैं। पूर्व में वह 20 वर्षों तक रुड़की विश्वविद्यालय सीनेट एवं कई वर्षों तक बीरबल साहनी इन्स्टीट्यूट ऑफ पैलियो-साइंसेज, लखनऊ की फाइनेंस एण्ड बिल्डिंग कमेटी के सदस्य भी रह चुके हैं। इस

अवसर पर विभिन्न विभागों एवं निजी संस्थानों के अनेक वरिष्ठ अभियन्ता उपस्थित थे जिन्होंने अभिनन्दन किया। कार्यक्रम के अन्तर्गत में आर.सी.पाण्डे, मानद सचिव ने सभी अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

उलाहना देवे गए युवक को जान से मारने की धमकी का दर्ज हुआ मुकदमा

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। सहजनवा ब्लाक अंतर्गत हरपुर बुदहट थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत देवरिया निवासी राम अशीष पुत्र मुन्नीलाल ने थाना पुलिस को तहरीर देकर युवक के खिलाफ बीएनएस की धारा 325, 352, 351(3) मुकदमा दर्ज कराया है। पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है। थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत देवरिया निवासी राम अशीष पुत्र मुन्नीलाल ने थाना पुलिस को तहरीर देकर बताया कि 6 नवंबर को हमारे गांव के ही अनिल पुत्र श्याम देव श्याम गांव बजे करीब दरवाजे के सामने हमारे बकरी के बच्चे के उपर मोटरसाइकिल चढ़ा दिए जिससे बच्चे की मौत हो गई, अनिल के घर पर उलाहना देने गया तो अनिल के पिता श्याम देव मुझे भद्दी भद्दी गालियां देते हुए जान से मारने की धमकी देने लगे। इस संबंध में

थानाध्यक्ष महेश कुमार चौबे ने बताया कि तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच की जा रही है।

लड़के को घेर कर पीटा, केस दर्ज

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। गोडा थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत भरसाड निवासी अंजिला देवी पत्नी अशोक साहनी के लड़के से गांव के कुछ लड़कों से विवाद चल रहा था। शनिवार को लड़का सहजनवा से घर आ रहा था कि जगदीशपुर गांव के पास मनबढ़ो ने उसे घेर कर लाठी डंडे हाकी से पीटकर घायल कर दिए। पुलिस ने पीड़ित की शिकायत पर सस्नी साहनी, आकाश साहनी, युवराज शिवशंकर के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है।

आपूर्ति निरीक्षक के छापेमारी में 130 लीटर डीजल बरामद

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। पीपीगंज थाना क्षेत्र के कल्याणपुर में आज आपूर्ति निरीक्षक कैप्टियरगंज संतोष वर्मा ने एक बड़ी कार्रवाई करते हुए अवैध तरीके से डीजल बेचने वाले दो लोगों को रंगे हाथ पकड़ा। अकटहवा निवासी महेंद्र पुत्र अनंत कुमार और धर्मेन्द्र कुमार के दुकानों पर छापेमारी के दौरान उनके पास से क्रमशः 30 लीटर और 100 लीटर डीजल बरामद हुआ है। सूत्रों के अनुसार, विभाग को सूचना मिली थी कि पीपीगंज अकटहवा रोड पर कुछ दुकानदार अवैध तरीके से डीजल और पेट्रोल की बिक्री कर रहे हैं। इसी सूचना के आधार पर आपूर्ति निरीक्षक ने छापेमारी की और दोनों दुकानदारों को रंगे हाथ पकड़ लिया। आपूर्ति निरीक्षक ने बताया कि जब किए गए डीजल को अपने कब्जे में लेकर विधिक कार्यवाही के लिए

खेत की बुआई करा रहे युवक को मनबढ़ो ने पीटा, केस दर्ज



अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। गोडा थाना क्षेत्र के अमटौरा निवासी ज्वाला प्रसाद श्रीवास्तव पूर्व स्व राम बुझारत लाल श्रीवास्तव का नाती अनुराग श्रीवास्तव 5 नवंबर को सुबह पिपरीली जा रहा था। रास्ते में दलित बस्ती के पास गांव का मनबढ़ युवक को लाठी डंडे धारीदार हथियार और ईंट से मार कर घायल कर दिए और उसका बाइक मोबाइल तोड़ दिए। शुक्रवार को दिन में साढ़े ग्यारह बजे पीड़ित नाती को लेकर थाने पर जा रहे थे तो आरोपी अपने स्वजन के साथ मिलकर बाइक से गिराकर बुरी तरह मारपीट कर घायल कर दिए। पुलिस ने गोलू सिंह, दीप सिंह, विजय सिंह, राम प्रसाद सिंह के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है।

नायब तहसीलदार ने आधा दर्जन बूथों का किए निरीक्षण, दिए निर्देश

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। गोरखपुर तहसील सहजनवा के नायब तहसीलदार दुर्गेश चौरसिया ने तहसील क्षेत्र के आधा दर्जन बूथों पर मतदाता अभियान का पूनरीक्षण अभियान की जांच की भारत निर्वाचन आयोग द्वारा मतदाता सूची पंजीकरण करने के लिए विशेष अभियान चलाया जा रहा है ऐसे नागरिक जो 01 जनवरी, 2025 को 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर रहे हों या उससे पूर्व ही पूर्ण कर चुके हों, वे अपना नाम मतदाता सूची में सम्मिलित करा सकते हैं इसी क्रम में नायब तहसीलदार दुर्गेश चौरसिया ने पिपरीली ब्लाक के पर आडंगा कालेसर, बडगहन, बरवार कुआवल खूर्द, तितनपार बूथों पर जाकर वहां पर अभियान की जानकारी और बीएलओ को निर्देश दिए कि जिनकी आयु 18 वर्ष से



ऊपर है उनका नाम मतदाता सूची में दर्ज करे। मृतक मतदाता का नाम सूची से हटाए। और जिनका नाम मतदाता सूची में दो जगह दर्ज है।

उनका नाम काट कर एक जगह मतदाता सूची में दर्ज कराए। इसके लिए फार्म 6 और 7 और 8 वितरित किया जा चुका है।

आपसी विवाद को लेकर दो पक्ष भिड़े, 11 पर केस दर्ज



अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। गोडा थाना क्षेत्र हरदिया निवासी ज्योति नद गांव में ही प्रेम विवाह किया है। जिसको लेकर मायके के लोग नाराज रहते थे। और मारने पीटने की धमकी देते थे। शनिवार को पीड़िता हैंडपंप पर पानी भर रही थी। अकेला देखकर मायके लोग जुट गए

और और घर में से खींच कर मारा पीटा। पुलिस ने शिवनाथ, राजेश, शांति, अनिता देवी, रीता के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। वही पुलिस ने दूसरे पक्ष शिवनाथ पुत्र सती लाल की शिकायत पर पुलिस ने सोनू, सुरज, सचिन, नीरज, युस, ज्योति के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है।

बागपत में महिलाओं के बीच मारपीट

गाना बजाने को लेकर हुआ विवाद, लाठी-डंडों से पीटा, 6

अमन लेखनी समाचार

बागपत, बागपत के दोघट कस्बे में गाना बजाने को लेकर दो पक्षों की महिलाओं के बीच जमकर मारपीट हो गई। इस मारपीट में एक पक्ष की महिलाओं ने दूसरी पक्ष की महिलाओं को बेरहमी से लाठी-डंडों से पीटा, जिससे कई महिलाएं गंभीर रूप से घायल हो गईं। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसके आधार पर पुलिस ने कार्रवाई शुरू की है। पीड़िता रेखा, जो कि दोघट कस्बे की निवासी हैं, ने पुलिस को बताया कि वह अपने घर पर बैठी थीं, तभी पड़ोस के मिथुन, चंश, सुरज, रशी, डोली, आशा, सुमन, कौशल और वेदों ने घर में घुसकर उन पर हमला कर दिया। रेखा का आरोप है कि हमलावरों ने लाठी-डंडों से मारपीट की, जिससे उनके परिवार के



कई सदस्य घायल हो गए। पुलिस ने पीड़िता की शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया है और सभी घायलों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है, जिससे घटना की गंभीरता बढ़

गई है। बड़ौते के सीओ विजय चौधरी ने जानकारी दी कि घटना के संबंध में दोनों पक्षों की महिलाओं के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। पुलिस ने बताया कि मामले की जांच चल रही है और दोषियों के खिलाफ उचित कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

खुर्जा में दिपावली के बाद बढ़ा प्रदूषण

एयर क्वालिटी इंडेक्स 250 के पार, पाबदियों के बाद भी कूड़ा जला रहे लोग

अमन लेखनी समाचार

खुर्जा, बुलंदशहर के खुर्जा में दिवाली पर सरकार द्वारा आतिशबाजी और कूड़ा जलाए जाने पर लगाए गए कड़े प्रतिबंधों के बावजूद जिले में प्रदूषण की स्थिति लगातार बिगड़ रही है। दीपावली के बाद से एयर क्वालिटी इंडेक्स (एक्यूआई) में लगातार वृद्धि हो रही है। नगर क्षेत्र में सुबह से ही घने धुंध का माहौल रहा, जिससे जिले की हवा की क्वालिटी गंभीर स्थिति में पहुंच गई। बुलंदशहर का एक्यूआई 250 के पार मापा गया, जो स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक हानिकारक माना जाता है। प्रदूषण नियंत्रण के लिए नगर पालिका की ओर से किए गए प्रयासों को नजरअंदाज किया गया। कई स्थानों पर कूड़ा जलाए जाने के कारण हवा में विषैली गैसों का उत्सर्जन हो रहा है,



जिससे सांस लेने में तकलीफ और अस्थमा के रोगियों को विशेष परेशानी हो रही है। बुलंदशहर जिले के खुरजा

सीएमएस डॉ. अनिल शर्मा ने बताया कि प्रदूषण के कारण अब आंखों में जलन, खुजली और एलर्जी के मरीजों की संख्या में भी वृद्धि हुई है। साथ ही, अस्थमा और रक्वसन संबंधी समस्याओं से परेशान रोगियों की भी संख्या बढ़ी है। उन्होंने बताया कि अगर तेज हवा या बारिश होती है, तो प्रदूषण में कुछ राहत मिल सकती है। नगर पालिका ने एंटी स्मोक गन को तैनात किया है और धूल उड़ने वाले क्षेत्रों में पानी का छिड़काव करने के प्रयास किए हैं। नगर पालिका की चेयरपर्सन अंजना सिंघल ने कहा, हमने प्रदूषण की रोकथाम के लिए कई कदम उठाए हैं, लेकिन यह बहुत बड़ी चुनौती है। एंटी स्मोक गन को तैनात किया गया है और पानी का छिड़काव भी कराया जा रहा है, लेकिन फिर भी स्थिति पूरी तरह से नियंत्रण में नहीं आई है।

गाजियाबाद पुलिस ने महिला चोर को पकड़ा



जेवर समेत करीब चार लाख रुपए बरामद

अमन लेखनी समाचार

गाजियाबाद, गाजियाबाद की थाना अंकुर विहार पुलिस ने एक चोरी का खुलासा किया है। पुलिस ने चोरी के आरोप में महिला बेलदार को गिरफ्तार किया है। महिला पीड़ित के निमाणांशिन मकान में काम कर रही थी। आरोपी महिला के कब्जे से जेवर समेत करीब 4 लाख रुपये बरामद हुए हैं। एसीपी अंकुर विहार भास्कर वर्मा ने बताया की 18 अक्टूबर को रेल विहार निवासी राहुल ने पुलिस को बताया था कि उनके घर से काफी मात्रा में जेवर और नकदी



चोरी हुई है। पुलिस ने तभी इस मामले में टीम गठित की थी। लगातार सर्विलांस और सीसीटीवी को खंगाला जा रहा था। इस बीच एक महिला संदिग्ध लगी, जो मूल रूप से मध्य प्रदेश की रहने वाली थी। जब महिला को पकड़ा गया तो पता चला कि इसका नाम सावित्री है। जो राहुल के बन रहे नए घर में बेलदारी का काम करती थी। पुलिस पूछताछ में सामने आया है कि सावित्री का राहुल के पुराने घर में भी आना-जाना था। इसी दौरान राहुल के पुराने घर का ताला खराब हो गया। सावित्री ने बड़ी चालाकी से नया ताला लेकर आई जिसकी एक चाबी उसने परिवार को दे दी।

मेरठ में सरधना विधायक के गांव में पथराव और फायरिंग

पार्टी में कमेंटबाजी को लेकर हुआ विवाद, लाठी-डंडे भी चले

अमन लेखनी समाचार

मेरठ, मेरठ के सरधना विधायक के गांव गडिना में पार्टी में हुई कमेंट को लेकर दो पक्ष आमने-सामने आ गए। एक पक्ष के दर्जनों लोगों ने लाठी डंडों और अवैध हथियारों से लैस होकर के गांव के प्रधान के घर में घुसकर हमला बोल दिया। इस दौरान दोनों पक्षों में जमकर पथराव हुआ। सड़क पर ईंट और पत्थर ही नजर ही आ रहे थे। पथराव के दौरान एक पक्ष की ओर से ताबड़तोड़ फायरिंग कर दी गई। जिसके कारण इलाके में भगदड़ मच गई मारपीट और पथराव में कई लोग घायल हो गए। गांव गडिना में एक पक्ष के दर्जनों लोगों ने लाठी डंडों अवैध हथियारों से लैस होकर गांव के प्रधान अमित और उनके पक्ष के लोगों पर घर

मेरठ, मेरठ के सरधना विधायक के गांव गडिना में पार्टी में हुई कमेंट को लेकर दो पक्ष आमने-सामने आ गए। एक पक्ष के दर्जनों लोगों ने लाठी डंडों और अवैध हथियारों से लैस होकर के गांव के प्रधान के घर में घुसकर हमला बोल दिया। इस दौरान दोनों पक्षों में जमकर पथराव हुआ। सड़क पर ईंट और पत्थर ही नजर ही आ रहे थे। पथराव के दौरान एक पक्ष की ओर से ताबड़तोड़ फायरिंग कर दी गई। जिसके कारण इलाके में भगदड़ मच गई मारपीट और पथराव में कई लोग घायल हो गए। गांव गडिना में एक पक्ष के दर्जनों लोगों ने लाठी डंडों अवैध हथियारों से लैस होकर गांव के प्रधान अमित और उनके पक्ष के लोगों पर घर



में घुस गए। लोगों ने लाठी डंडों से मारपीट शुरू कर दी। इस दौरान दोनों पक्षों में हंगामा मारपीट और पथराव होने लगा। इस दौरान कई लोग घायल हो गए। पथराव इतना भयंकर था कि पूरी सड़क ईंट और पत्थरों से पट गई। सूचना मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंच गई। पुलिस को देखकर आरोपी मौके से फरार हो गए। प्रधान अमित ने बताया कि दो दिन पहले उनके चचेरे भाई के साथ चुनाव की रंजिश को लेकर दूसरे पक्ष के आरोपियों द्वारा मारपीट कर दी थी। बाद में दोनों पक्षों ने एक दूसरे के खिलाफ रिपोर्ट लिखवा

दी थी। अमित का आरोप है कि पुलिस ने आरोपियों पर कार्यवाही नहीं की जिसके चलते उनके हौसले बुलंद हो गए और उन्होंने फिर उनके घर पर हमला बोल दिया। थाना पुलिस का कहना है कि दो पक्षों में मारपीट की सूचना मिली थी। सूचना के बाद पुलिस मौके पर पहुंची कुछ लोगों को हिरासत में दिया गया है। घायलों को उपचार के लिए भेज दिया गया है फिलहाल गोली चलने की बात प्रकाश में नहीं आई है। मामले की जांच की जा रही है आरोपियों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।

जब भी पैरेंटिंग की बात आती है तो मां-पिता से अपेक्षा की जाती है कि वे ही अपने बच्चों को अच्छी आदतें, गुण और संस्कार सिखा सकते हैं। यह बात सही भी है। लेकिन अगर हम चाहे तो अपने बच्चों को सिखाने के दौरान हम भी उनसे बहुत कुछ सीख सकते हैं। यकीन मानिए, एक-दूसरे से सीखने-सिखाने का यह सफर बहुत प्यारा हो जाएगा।

बाल दिवस 14 नवंबर
विशेष

कुछ बच्चे सीखें कुछ सीखें मम्मी-पापा



दरद की पोटली तो भारी ही होती जाती है। जीवन के उतार-चढ़ाव की सहज स्वीकार्यता नहीं रहती। मन-जीवन को हल्का रखने का यह सबक बच्चों से सीखा जा सकता है। अपने बच्चों को देखिए और सीखिए कि कैसे बालमन, खुशी या तकलीफ दोनों को ही लंबे समय तक याद नहीं रखता। पल भर में उनकी नाराजगी दूर हो जाती है। चंद लम्हों में ही अपने प्यारे खिलौने के टूटने का दुःख भुला देते हैं। जीवन में अच्छा, बुरा समय आता जाता रहता है। सहजता से हर सुख-दुःख को स्वीकार कर आगे बढ़ने में ही जीवन की सार्थकता है।

खासियत है कि वह जो बीत गया, उसे जाने देता है। किसी खिलौने के टूटने पर रोते अपने बच्चे को सांत्वना और प्यार से समझाते पैरेंट्स, खुद भी बीती बातें भूलकर आगे बढ़ना सीख सकते हैं।

साझी खुशियां जीने की सीख

बच्चे, अपना खिलौना अपने साथियों को दिखाने को आतुर रहते हैं। मिल-जुलकर हर खेल खेलते हैं। बचपन हर तरह से साझी खुशियों को जीता है। जबकि उनके पैरेंट्स यानी हम बड़ी उम्र के लोग अपने सुख साझा करने में हिचकते हैं। अपनी उपलब्धियां बताने से डरते हैं। इतना ही नहीं बड़ी उम्र के लोग कई तरह के भेदभाव और अलगाव को भी जीने लगते हैं। कारण चाहे परिवेश से जुड़ा हो या व्यक्तिगत सोच से, साझेपन का भाव कम होता जाता है। ऐसे में बालमन से, मेल-जोल और सुख-खुशियां साझा की सीख ली जा सकती है। अपने मन को सकारात्मक और सहज बनाया जा सकता है।



बालमन सिखाता है कि किसी एक घटना का साथी जिंदगी के हर लम्हे को सुना और असहज नहीं बना देता। भूलकर आगे बढ़ना भी आवश्यक है। बीती बातों और हालातों को लेकर जीवन में हर समय गंभीरता नहीं ओढ़ी जा सकती। थोड़ी खिलखिलाहटें, थोड़ी मुस्कराहटें जीवन को हर दिन नई ऊर्जा देती हैं। बीती को विसारने का यह सबक बड़ों को मासूम बच्चों से सीखना होगा। समझना होगा कि कैसे हर हाल में खुश रहा जा सकता है। चोट पर फूक भर मार देने से दर्द भुलाकर हंसने की राह चुनी जा सकती है। बालमन की

और सहज बनाया जा सकता है। एक अंग्रेजी कहावत है 'हमारी आत्मा बच्चों के साथ रहने पर स्वस्थ होती है।' यानी बच्चों से मिलने और उनके साथ समय बिताने वाला हर इंसान आनंद की सौगात पाता है। असल में बच्चे ना केवल खुलकर खुशियां बटोरते हैं बल्कि बांटते भी हैं। कभी-कभी तो आंखों में आंसू और चेहरे पर हंसी एक साथ दिख जाते हैं। यह सरलता और स्वीकार्यता का भाव ही तो जीना आसान करता है। सबसे जोड़कर रखता है। बच्चों की खुशी एक समान होती है चाहे, उन्हें कोई माटी का खिलौना मिले या महंगा खिलौना। बड़े भी खुशियां बांटना और खुश रहना बच्चों से सीख सकते हैं। इस तरह परवरिश की साझी यात्रा में दोनों पीढ़ियों के मन को सकारात्मकता से सींचा जा सकता है। *

हर मां-बाप चाहते हैं कि उनके बच्चे समझदार, जिम्मेदार, विवेकशील और जागरूक इंसान बनें। वास्तव में हर बच्चा ऐसा बन सकता है, बशर्तें उसकी पैरेंटिंग सही तरीके से की जाए। उसे जरूरी और उपयोगी बातें, आदतें सरल-सहज तरीके से सिखाई जाएं।



अपने बच्चों को ऐसे बनाएं समझदार - जिम्मेदार - जागरूक

पैरेंटिंग
डिवाय चंद जैन

बच्चों में सीखने की अपार क्षमता होती है। विज्ञान कहता है कि बच्चे नई चीजों, तकनीक, भाषा, शिष्टाचार या अनुशासन संबंधी बातों वयस्कों की तुलना में जल्दी सीख सकते हैं। बस जरूरत इस बात की है कि पैरेंट्स उन्हें सही और सहज तरीके से समझाएं, सिखाएं।

अन्न का महत्व समझाएं: पैरेंट्स को ध्यान रखना चाहिए कि वे हर रोज अपने बच्चों के साथ कम से कम दो बार खाना जरूर खाएं। इस दौरान बातों ही बातों में उन्हें अनाज आदि उगाने की जटिल और समय साध्य प्रक्रिया, अन्न, फल और सब्जियों जैसी जीवन के लिए जरूरी प्राकृतिक चीजों के महत्व और किसानों के कठिन परिश्रम के बारे में भी बताएं। उन्हें यह भी बताएं कि अपनी थाली में खाना जूटा ना छोड़ें, क्योंकि इसमें ढेर सारे लोगों की मेहनत और प्राकृतिक संसाधन खर्च होते हैं। इससे बच्चे को अन्न और खाद्य-पदार्थों की महत्ता पता चलेगी। आगे चलकर भी वो हमेशा अन्न की महत्ता को समझेगा।

स्वावलंबन - अनुशासन का पाठ: खाने के बाद उन्हें अपने बर्तन खुद धोने दें। स्कूल से आने के बाद बैग और यूनिफॉर्म को समेट सही स्थान पर रखें। सुबह नहाने से पहले अपने कपड़े खुद आलमारी से निकाल कर तैयार रखें। इस तरह के छोटे-छोटे कामों से बच्चे मेहनत की कोमल समझेंगे। कभी-कभी उन्हें अपने साथ खाना बनाने में मदद करने दें। उन्हें अपने हाथों से सलाद बनाना सिखाएं। छोटी-मोटी चीजें खरीदने के लिए पास के ग्रासरी स्टोर पर भी भेजें।

सिखाएं सामाजिकता-मिलनसारिता: बच्चों को सामाजिक मेलजोल और मिलनसारिता सिखाने के लिए कभी-कभी उनके साथ पड़ोसियों के घर जाएं। उनके हाल-चाल जानें और प्रेम व्यवहार बढ़ाएं। रिश्तेदारों, बच्चों के दादा-दादी या नाना-नानी के घर जाएं या उन्हें अपने घर पर बुलाएं। इससे बच्चों को अपने परिवार के सदस्यों, रिश्तेदारों और पड़ोसियों से घुलने-मिलने का अवसर मिलेगा। वे सहजता से सामाजिकता और मिलनसारिता का पाठ सीख पाएंगे। उनका प्यार और भावनात्मक सहारा आपके बच्चों के लिए बहुत जरूरी है। समय-समय पर किस्सागाईं करते हुए अपने बचपन और अपने परिवार के पुराने दिनों के बारे में भी बच्चों को बताएं।

बागवानी सिखाएं: अपने बच्चों को किचन गार्डन बनाने के लिए, बीज बोने के लिए प्रेरित करें। पेड़-पौधों के बारे में जानकारी होना भी बच्चे के विकास के लिए बहुत जरूरी है। ऐसी गतिविधियां आपके बच्चों को टीवी, मोबाइल फोन, कंप्यूटर और इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स से दूर रखने में भी मददगार होंगी। अपने बच्चों को बाहर जाकर खेलने दें। उन्हें हल्की-फुल्की चोट लगती है तो लगने दें। कभी-कभार दुर्द सनना उनके लिए अच्छा होता है। उन्हें प्रकृति के करीब समय बिताने के लिए जरूर प्रेरित करें। हमेशा घर में रहने वाली आरामदायक जिंदगी बच्चों को सुस्त बना देती है।

दया-परोपकार की भावना करें जागृत: बच्चों के हाथ से कबूतरों को दाना, गाय को रोटी, डोंगी को बिरिच, बिल्ली को दूध आदि दिलाएं। घर या आस-पास के किसी बुजुर्ग या जरूरतमंद की मदद करने के लिए उसे प्रेरित करें। उसे दिखाएं कि उसकी मदद से इंसानों और पशु-पक्षियों को कितनी खुशी मिलती है। इससे बच्चे में दया-परोपकार की भावना विकसित होती है।

अच्छी किताबें पढ़ने के लिए प्रेरित करें: पत्र-पत्रिकाएं और किताबें, ज्ञान-सूचना पाने के अच्छे साधन हैं। अपने बच्चों को शुरूआत से ही प्रेरक और शिक्षादायक कहानों और ज्ञानवर्धक किताबें पढ़ने की आदत डलवाएं। महापुरुषों और सफल लोगों की जीवनीयां पढ़ने को प्रेरित करें।

अपने कार्य के बारे में बताएं: आपके बच्चों को यह भी पता होना चाहिए कि आप कितनी मेहनत से नौकरी करके पैसे कमाते हैं, जो परिवार पर खर्च होते हैं। किसी खास अवसर पर या वर्ष में एक-दो बार संभव हो तो बच्चों को अपने वर्कप्लेस पर लेसक जाएं, जिससे वो समझ सकेंगे कि आप किस तरह उनके और परिवार के बाकी सदस्यों के लिए किस तरह का काम करते हैं, कितनी मेहनत करते हैं।

शाबासी देना भी है जरूरी: आपका बच्चा कुछ अच्छा काम करे या कोई सफलता हासिल करे तो उसे शाबासी देकर जरूर प्रोत्साहित करें। इसी प्रकार वह अगर चिंटियों को मार रहा हो, पक्षियों पर पत्थर फेंक रहा हो या कुछ गलत कर रहा हो तो उसे समझाएं कि उसके इस काम से नन्हें जीव-जंतुओं को पीड़ा होती है। उसके सामने आप खुद भी दूसरे लोगों के प्रति और पशु-पक्षियों के प्रति दया का भाव दिखाएं। इस तरह आपके छोटे-छोटे प्रयासों से बच्चे में अच्छे संस्कार विकसित हो जाएंगे। *



कवर स्टोरी
डॉ. मोनिका शर्मा

जाने क्यों और कैसे यह मान लिया गया कि बच्चों को हरदम कुछ सिखाते-समझाते रहना ही पैरेंट्स का काम है। जबकि बच्चों से भी बहुत कुछ सीखा जा सकता है। असल में पैरेंटिंग सीखने-गुनने का एक साझा सफर है। मन-जीवन की हिस्सेदारी वाली भाव भरी यात्रा, जिसमें बच्चों को नसीहतें देते पैरेंट्स खुद भी बहुत कुछ सीखते चलते हैं। वहीं अभिभावकों के शब्द ही नहीं हाव-भाव तक समझ लेने वाले बच्चे तो सब कुछ अपने बड़ों से सीखते ही हैं। ऐसे में सीखने-समझने का यह साझा सफर एक-दूसरे को और गहराई से जोड़ता है। अनुभव और भोलेपन की यह साझेदारी, स्नेह-संवाद का प्यासा पुल बनाती है। यूं जुड़ाव भरी सोच के साथ बच्चे और बड़े आपस में जुड़कर कुछ सीखते-गुनते हैं तो जीवन को संभारने का पाठ दोनों ही पीढ़ियां साथ में पढ़ती हैं।

निश्चल मन का पाठ

बच्चों का मन हर दुर्गाव-छिपाव से परे होता है। देखा जाए तो बड़े भी मन-मस्तिष्क को दुनियावी उलझनों से दूर ही रखना चाहते हैं। हालांकि अभिभावकों के लिए व्यावहारिक रूप से सांसारिक समस्याओं से दूर रहना थोड़ा कठिन होता है पर बच्चों संग इस निश्चलता को जीवन में उतारना आसान हो जाता है। ऐसे में अपने बच्चों के बचपन को संभारते हुए मन को निश्चल बनाने का जतन तो हम कर ही सकते हैं। यह निश्चलता जिंदगी की जहोजहद में उलझे बड़ों को भी कितनी ही बातों से मुक्त कर देती है। फायदे-नुकसान से परे एक ऐसे वैचारिक भाव को पोषित करती है, जिसमें कोई द्वेष और चालाकी नहीं होती। मन संतोष और खुशी से भर जाता है। यह खुशी उस बेफिक्री को वजह से मिलती है, जो मन की सरलता के कारण बड़ों की झोली में आती है। आज के प्रतियोगिता भर जीवन में इतनी भागम-भाग और कटुता व्याप्त हो गई है कि ना बेफिक्री बची है और ना ही सहजता। इन हालातों में बच्चों के



व्यस्तता के बीच साथ रहने का सुख

आज की व्यस्त पीढ़ी में कमोबेश हर किसी को यह शिकायत है कि रचनात्मक सोच और सार्थक व्यस्तता से दूरी बढ़ी है। कोई काम-काजी आपा-धापी में गुम है तो कोई घरेलू जिम्मेदारियों की भाव-दौड़ में। वैंड पैरेंट्स के लिए तो खाली समय को बिताना ही एक समस्या बन जाता है। ऐसे में बच्चे और बड़े दोनों ही एक-दूसरे से बहुत कुछ सीख सकते हैं। नई पीढ़ी अपने अभिभावकों और बड़े-बुजुर्गों से थोड़ा ठहराव बरतना सीख सकती है तो बड़े भी, अपने बच्चों से रचनात्मक व्यस्तता वाली क्लास के विद्यार्थी बन ही सकते हैं। असल में बालमन की व्यस्तता में नकारात्मकता का कोई भाव नहीं होता। खेल हो या पढ़ाई, उनकी व्यस्तता अर्थपूर्ण भाव लिए होती है। मन कुछ नया सीखने में व्यस्त रहता है। देखा जाए तो आज की व्यस्त पीढ़ी में भी हर कोई व्यस्त ही है। जीवन की गति से तालमेल बनाए रखने को आतुर है। या यूं कहें कि जीवन से भी अधिक तेजी से दौड़ने को बाध्य है। हम भागे तो जा रहे हैं पर जितना स्वयं को उठाइया रखा है, उसका हासिल क्या है, यह भी नहीं सोचते। ऐसे में हमारी व्यस्तता



का भी अर्थपूर्ण और सकारात्मक होना आवश्यक है। इसके लिए अपने काम या लोचरी के अलावा बड़ों को भी कुछ ना कुछ क्रिएटिव करते रहना चाहिए। व्यस्तता के बीच अपने परिवार के संग कुछ पल बिताने, हंस्के-खिलखिलाने का आनंद बच्चों के संग हम भी जरूर लें।

मोबाइल से शब्दों की, रुई इस तरह हार। एक इमोजी बन रही, सबकी रिश्तेदार। नेता ऐसे अभिनेता, बदला नहीं मिजाज। वादे सारे भूलकर, परन चले हैं ताज। आइंवर बाजार में, ऐसा हाहाकार। निर्धन के दिल यों लगे, ज्यों बिजली का तार। लपफाजों की आजकल, दुनिया हुई मुरीद। आम आदमी की मगर, उड़ी हुई है नींद। पिंडदान लेने लगा, करुण भाव का आज। मस्के का संपुट पढ़ें, लोभी धोखेबाज। सत्यवान का राल है, बेसुरा औ बेताल सरगम गाता झूठ तो, बगा रस है गाल। दुनिया के कोलाहल में, रुआ दिखावा और। सीधे-सच्चे पर नहीं, किया किसी ने गौर।

लघुकथा / गोविंद भारद्वाज

शहर के मुख्य चौराहे के ट्रैफिक सिग्नल पर लाल बत्ती हो चुकी थी। मैंने अपनी गाड़ी रोक दी। अचानक मेरे पास एक चौदह-पंद्रह साल का लड़का आया।

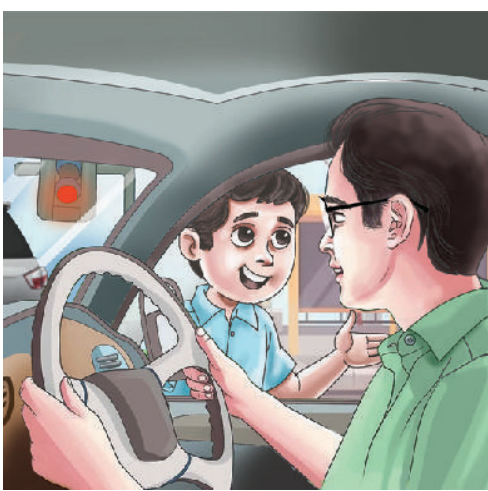
'सर नमस्ते...!' उसने मुझे बड़े सम्मान के साथ हाथ जोड़कर नमस्कार किया।

मैंने भी जवाब में कहा, 'नमस्ते बेटा...'

वह हल्की-सी मुस्कराहट के साथ बोला, 'आप वही सर हैं ना, जो पर्यावरण दिवस पर विशेष अतिथि के रूप में मेरे स्कूल आए थे। आपने पर्यावरण पर बहुत ही अच्छा भाषण दिया था। आज तक आपकी बातों का मुझ पर असर है।'

'अरे हां... याद आया, शहर के सरकारी स्कूल में गया था मैं। अरे वाह! तुम्हें अभी तक मेरा चेहरा और भाषण याद है, धन्यवाद बेटा।' मेरी नजर लाल बत्ती पर टिकी थी। 'एक बात कहूं सर, बुरा तो नहीं मानेंगे?' लड़का सकुचाते हुए बोला।

बात का असर



'कहो बेटा, बुरा क्यों मानूंगा।' मैंने तुरंत चुपचाप आगे गाड़ी बढ़ा दी। मन ही मन मैं अपने कृत्य पर शर्मिदा था। *

खड़ी रहने के बावजूद आपने इंजन बंद नहीं किया। पेट्रोल की बर्बादी के साथ-साथ वायु प्रदूषण भी हो रहा है। देखिए, बाकी सभी ने अपनी गाड़ियां बंद कर रखी हैं। 'सॉरी बेटा... तुम्हारी बात एकदम सही है।' मैंने गलती स्वीकारी। फिर बात पलटते हुए मैंने पूछा, 'बेटा तुम इस वक्त क्यों?' वह मुस्कराते हुए बोला, 'सर आज सड़ है ना, आपके उस दिन के भाषण से प्रभावित होकर मैं स्कूल की छुट्टी के दिन पर्यावरण जागरूकता का काम करता हूँ, शहर के किसी भी चौराहे पर।'

लघुकथा / सूर्यकुमार पांडेय

उम्मीद से...

कोरियाई कृतिकार के नाम नोबेल पुरस्कार घोषित होते ही हमारे इधर के एक अखिल भारतीय कॉलोनो प्रसिद्ध मेल (सबसे मेल रखने वाले) ने अपने को हिंदी साहित्य का 'हान कांग' घोषित कर दिया है।

वह अपने को लेखक कहते हैं।

मैंने उनसे कहा, 'आपका यह दावा हास्यास्पद है। हान कांग एक महिला साहित्यकार हैं।' वह बोले, 'पुरस्कार के लिए मैं किसी भी हद को लांघ सकता हूँ। मेरी पुस्तकों से अधिक मेरे पुरस्कारों की संख्या है।' मैंने कहा, 'बधाई!'

वह मुझसे पूछने लग गए, 'आप अपने पिताजी के नाम से कब पुरस्कार घोषित कर रहे हैं?' *



यूपी महिला आयोग ने किया पुरुष टेलरों का विरोध तो गरमाई सियासत

उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग ने युवतियों और महिलाओं को बैट टच से बचाने और पुरुषों के बुरे इरादों को रोकने के लिए एक प्रस्ताव तैयार करके योगी सरकार के पास भेज रहीं हैं। यदि यह प्रस्ताव स्वीकार हो जाता है तो भविष्य में पुरुष टेलरों और बाल काटने वाले पुरुषों के सामने काफी परेशानी खड़ी हो सकती है। महिला आयोग ने कहा है कि पुरुष टेलरों को महिलाओं के कपड़े नहीं सिलने चाहिए और न ही उनके बाल काटने चाहिए। कुछ दिनों पूर्व यह प्रस्ताव राज्य महिला आयोग की बैठक में आयोग की अध्यक्ष बबीता चौहान की तरफ से पेश किया गया, जिसका बैठक में मौजूद अन्य सदस्यों ने समर्थन किया, जिसके बाद अब इसे कानूनी जामा पहनाने के लिये सरकार के पास भेजा जायेगा।

महिला आयोग के इस फैसले पर अलग-अलग स्तर पर प्रतिक्रिया भी आना शुरू हो गई है। समाजवादी पार्टी के नेता अर्जुन से बीजेपी की कारगुजारी बता रहे हैं। समाजवादी पार्टी के प्रवक्ता अनुराग भदौरिया ने इसे बीजेपी की गिनौनी साजिश करार दिया है। भदौरिया का कहना है कि भगवा ब्रिगेड प्रदेश को साम्प्रदायिकता के आग में झोंक रही है, जिससे कोई नहीं बचेगा। अगर लगाने वाले भी इसके शिकार हो जायेंगे। वहीं बीजेपी के प्रदेश प्रवक्ता राकेश त्रिपाठी का कहना है कि महिला आयोग ने यदि ऐसा कोई फैसला लिया है तो जरूर उसके पास बैट टच को लेकर कुछ साक्ष्य मौजूद होंगे। अभी इस तरह का कोई प्रस्ताव सरकार के पास नहीं आया है, जब आयेगा तो इसके गुण-दोष के आधार पर फैसला लया जायेगा। वहीं इन पेशों से जुड़े लोगों को इसकी आदत भर से रोजी रोटी की चिंता सताने लगी है। इन लोगों का कहना है कि

किन्हीं एक-दो घटनाओं को आधार बनाकर इन घंटों से जुड़े लोगों की जिविका नहीं छीनी जानी चाहिए। सरकार को यदि कुछ कमी नजर आती है तो वह सुधार कर सकती है। बता दें महिला दर्जा, नाई और जिम टर्नर जैसे व्यवसायों में एक वर्ग विशेष के लोगों का वर्चस्व है। अक्सर यहां महिलाओं के साथ बैट टच के मामले भी सामने आते रहते हैं।

बता दें कि 28 अक्टूबर को हुई महिला आयोग की एक बैठक के बाद कई ऐसे सुझाव दिए गए, जिनमें पुरुषों को महिलाओं का नाप लेने की अनुमति नहीं देना और शॉप पर सीसीटीवी कैमरे लगाना आदि शामिल हैं। फिलहाल, अभी यह सिर्फ एक प्रस्ताव है और महिला आयोग बाद में राज्य सरकार से इस संबंध में कानून बनाने का अनुरोध कर रहा है। इस बाबत यूपी महिला आयोग की सदस्य हिमानी अग्रवाल ने आज बताया कि हाल ही में हुई महिला आयोग की बैठक में एक प्रस्ताव रखा गया था कि केवल महिला टेलर ही महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले कपड़ों का नाप लें। साथ ही शॉप में सीसीटीवी लगाए जाएं। हिमानी अग्रवाल ने यह भी कहा है कि इसी तरह से सैलून में केवल महिला नाई ही महिला ग्राहकों को देखभाल करें। क्योंकि, हमारा मानना है कि इस तरह के पेशे में शामिल पुरुषों की वजह से महिलाओं के साथ छेड़छाड़ होती है। वे (पुरुष) गलत व्यवहार करने की कोशिश करते हैं। कुछ पुरुषों की मंशा भी अच्छी नहीं होती है। हालांकि, उन्होंने यह भी कहा कि ऐसा नहीं है कि सभी पुरुषों की मंशा खराब होती है।